RNI No. GUJHIN/2011/39228
GARVI GUJARAT
गरवी गुजरात
गरवी गुजरात
अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 184
दि. 05.11.2025, बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.
Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

भारत-बांग्लादेश से वीज़ा धोखाधड़ी पर कनाडा सख्त — सामूहिक वीज़ा रद्दीकरण की दिशा में बढ़ा कदम, बढ़ते फर्जी आवेदनों से चिंतित सरकार

ओटावा। कनाडा सरकार ने भारत और बांग्लादेश से आने वाले फर्जी वीज़ा आवेदनों और आव्रजन धोखाधड़ी के मामलों में तेजी से वृद्धि को देखते हुए सख्त कदम उठाने का निर्णय लिया है। सरकार अब एक नया प्रावधान लागू करने की तैयारी में है, जिसके तहत "अस्थायी वीज़ा" (Temporary Visa) को सामूहिक रूप से रद्द करने के विशेष अधिकार उसे मिल जाएंगे। यह बदलाव कनाडा के सीमा नियंत्रण और आव्रजन कानून 'बिल C-12' के अंतर्गत प्रस्तावित है, जो कथित रूप से "सिस्टमेटिक वीज़ा दुरुपयोग" पर रोक लगाने की दिशा में सबसे बड़ा कदम माना जा रहा है।

भारत और बांग्लादेश को 'विशेष निगरानी सूची' में रखा गया

अमेरिकी चैनल सीबीएस न्यूज़ की रिपोर्ट के अनुसार, कनाडा सरकार के आंतरिक दस्तावेजों में भारत और बांग्लादेश को "विशेष चुनौतियों वाले देश" के रूप में चिह्नित किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि दोनों देशों से आने वाले बड़ी संख्या में वीज़ा आवेदनों में फर्जी दस्तावेज़, जाली रोजगार पत्र और गलत शिक्षा प्रमाणपत्रों का उपयोग किया जा रहा है। इसी वजह से सरकार अब 'समूह आधारित रद्दीकरण नीति' लागू करने पर विचार कर रही है, जिसके तहत किसी विशिष्ट नेटवर्क या क्षेत्र से आने वाले सैकड़ों वीज़ा एक साथ निरस्त किए जा सकेंगे।

आव्रजन मंत्री लीना दियाब ने कहा — "यह किसी देश के खिलाफ नहीं, बल्कि सिस्टम की सुरक्षा के लिए"

कनाडा की आव्रजन मंत्री लीना दियाब ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, "हम किसी देश को निशाना नहीं बना रहे हैं। यह कदम हमारी आव्रजन प्रणाली की सुरक्षा और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए है।" उन्होंने बताया कि हाल के महीनों में ऐसे कई नेटवर्क पकड़े गए हैं जो 'स्टडी वीज़ा' और 'वर्क परमिट' के नाम पर युवाओं से लाखों डॉलर लेकर झूठे दस्तावेज़ तैयार करवा रहे थे। दियाब ने कहा कि सरकार का फोकस अब "प्रामाणिक आवेदकों की पहचान सुनिश्चित करने" पर होगा।

अवैध प्रवेश और धोखाधड़ी में तेजी से बदलाव

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, 2024 में सीमा पार अवैध प्रवेश में 97 प्रतिशत की कमी आई है, लेकिन वीज़ा धोखाधड़ी के मामलों में 25 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। कनाडा की

आव्रजन एजेंसी (IRCC), सीमा सेवा एजेंसी (CBSA) और एक अमेरिकी एजेंसी मिलकर एक विशेष जांच अभियान चला रही हैं, जो भारत, बांग्लादेश और कुछ अफ्रीकी देशों से आने वाले संदिग्ध आवेदनों की जांच कर रही है।

भारतीय शरणार्थी आवेदनों में चार गुना उछाल

कनाडा के आंतरिक मंत्रालय के अनुसार, भारतीय नागरिकों द्वारा शरण के दावों की संख्या मई 2023 में 500 प्रति माह से बढ़कर जुलाई 2024 तक 2,000 प्रति माह तक पहुंच गई है। इस तेज़ वृद्धि ने सरकार की चिंताओं को और गहरा कर दिया है। वहीं, वीज़ा सत्यापन प्रक्रिया के जटिल होने के कारण आवेदन प्रसंस्करण का औसत समय 30 से बढ़कर 54 दिन हो गया है, जिससे आवेदकों और विश्वविद्यालयों दोनों को असुविधा का सामना करना पड़ रहा है।

सिविल सोसायटी संगठनों ने जताई नाराज़गी

कनाडा के 300 से अधिक नागरिक समाज संगठनों ने इस कदम का विरोध करते हुए इसे "अत्यधिक केंद्रीकृत और कठोर नीति" करार दिया है। संगठन 'माइग्रेंट राइट्स नेटवर्क' ने कहा कि बिल C-12 सरकार को "सामूहिक निर्वासन" जैसी शक्ति प्रदान कर सकता है, जो मानवाधिकारों के सिद्धांतों के विपरीत है। संगठन का कहना है कि इस कानून के तहत सरकार बिना किसी व्यक्तिगत सुनवाई के हजारों लोगों के वीज़ा रद्द कर सकती है।

सरकार ने दिया आश्वासन — 'कानूनी पारदर्शिता बनी रहेगी'

इन आलोचनाओं के जवाब में कनाडा सरकार ने कहा है कि यह बिल केवल उन मामलों पर लागू होगा जहां स्पष्ट रूप से धोखाधड़ी, जालसाजी या सुरक्षा खतरे पाए जाएंगे। मंत्रालय ने यह भी दोहराया कि "किसी भी वीज़ा निरस्तीकरण से पहले आवेदक को उचित कानूनी प्रक्रिया और अपील का अधिकार" दिया जाएगा।

कनाडा में भारतीय छात्रों की बढ़ती संख्या ने भी बढ़ाई चिंता

वर्तमान में कनाडा में पढ़ रहे भारतीय छात्रों की संख्या 3.2 लाख से अधिक है, जिनमें से बड़ी संख्या वर्क परमिट और स्थायी नागरिकता की दिशा में आगे बढ़ती है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि यह बिल लागू हो गया तो इसका असर न केवल फर्जी एजेंटों पर पड़ेगा बल्कि उन असली छात्रों पर भी हो सकता है जो वैध मार्ग से विदेश जा रहे हैं।

कनाडा सरकार का यह कदम अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बन गया है। भारत और बांग्लादेश से आने वाले आवेदकों के लिए यह नीति एक नई चुनौती साबित हो सकती है, जबकि सरकार का कहना है कि यह उनके अपने नागरिकों और आव्रजन प्रणाली दोनों की सुरक्षा के लिए आवश्यक है।

विजयपुरा फिर हिला, 60 दिन में 13वीं बार कांपी धरती

विजयपुरा। कर्नाटक के विजयपुरा जिले में मंगलवार सुबह एक बार फिर भूकंप के झटके महसूस किए गए। सुबह करीब 7 बजकर 49 मिनट पर आए इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 2.9 दर्ज की गई। लगातार झटकों से स्थानीय लोगों में भय का माहौल है, क्योंकि बीते दो महीनों में यह 13वां भूकंप है जिसने क्षेत्र को हिला दिया है। कर्नाटक राज्य प्राकृतिक आपदा निगरानी केंद्र (KSNDMC) के अनुसार भूकंप का केंद्र विजयपुरा तालुका के भूतनल टांडा से करीब 3.6 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित था। अधिकारियों ने बताया कि भूकंप की तीव्रता कम होने के बावजूद लगातार झटकों का सिलसिला चिंताजनक है। जिला प्रशासन और भूविज्ञान विभाग की टीम इलाके में सर्वे कर रही है। भूकंप के झटके विजयपुरा शहर समेत टिकोटा, कालकाकावाटागी, तोरावी, शिवगिरी और होन्नुतागी इलाकों में महसूस किए गए। कई लोगों ने बताया कि झटके के साथ तेज धमाके जैसी आवाज़ सुनाई दी और घरों की दीवारें कुछ सेकंड तक कांपीं। कई स्थानों पर लगे सीसीटीवी कैमरों में धरती के हिलने और आवाज़ की रिकॉर्डिंग भी सामने आई है।

तूफान 'कलमाएगी' ने मचाई फिलीपींस में भारी तबाही — सेबू में डूबा शहर, लाखों बेघर और 26 की मौत से हाहाकार

बैंकॉक। दक्षिण-पूर्व एशिया के द्वीप राष्ट्र फिलीपींस में आए विनाशकारी तूफान 'कलमाएगी' ने तबाही की ऐसी तस्वीर पेश की है, जिसने पूरे देश को दहला दिया है। सोमवार देर रात आए इस भीषण तूफान ने जहां दर्जनों लोगों की जान ले ली, वहीं लाखों लोग बेघर होकर सुरक्षित ठिकानों की तलाश में हैं। फिलीपींस के मध्य और दक्षिणी इलाकों में भारी बारिश और तूफानी हवाओं ने जनजीवन को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया है।

सबसे ज्यादा प्रभावित क्षेत्र सेबू द्वीप बताया जा रहा है, जहां जलस्तर कई जगहों पर दो मंजिला इमारतों तक पहुंच गया। स्थानीय प्रशासन ने बताया कि अकेले सेबू में ही 21 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि सैकड़ों लापता हैं। राहत और बचाव कार्य लगातार जारी है, लेकिन कई इलाकों में जलभराव और संचार व्यवस्था ठप होने के कारण बचाव दलों को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है।

लेयते प्रांत में एक बुजुर्ग व्यक्ति की मौत उस समय हो गई जब उसका घर पानी में डूब गया। वहीं बोहोल प्रांत में एक पेड़ गिरने से एक अन्य व्यक्ति की जान चली गई। प्रशासन का कहना है कि मरने वालों की संख्या और बढ़ सकती है क्योंकि कई घर पूरी तरह जलमग्न हैं और राहत

दल अब भी मलबे और पानी से शव निकालने में जुटे हुए हैं।

गवर्नर पामेला बरिंक्वाट्रो ने कहा, "हमने सोचा था कि इस तूफान में हवाएं सबसे बड़ा खतरा बनेंगी, लेकिन असली खतरा पानी साबित हुआ। सेबू के कई इलाकों में इतनी बारिश हुई कि लोग अपने घरों की छतों पर शरण लेने को मजबूर हो गए।" मौसम विभाग के अनुसार, तूफान के दौरान 183 मिलीमीटर से अधिक बारिश दर्ज की गई, जो सामान्य मासिक औसत से कई गुना ज्यादा है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी ने बताया कि अब तक चार लाख से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। फिर भी कई इलाकों में बाढ़ और भूस्खलन के कारण फंसे लोगों तक राहत सामग्री नहीं पहुंच पाई है। सेबू सिटी और आसपास के जिलों में बचाव दलों ने दो बच्चों के शव भी निकाले हैं। फिलहाल स्कूल, दफ्तर और हवाई सेवाएं अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दी गई हैं।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए फिलीपींस के राष्ट्रपति ने आपातकाल की घोषणा कर दी है और सेना, नौसेना तथा वायुसेना को राहत अभियान में झोंक दिया गया है। सेबू, बोहोल, लेयते और समर प्रांतों में बचाव दल नावों, हेलीकॉप्टरों और रस्सियों की मदद से लोगों को निकाल रहे हैं।

इस बीच एक दुखद खबर राहत अभियान से भी आई। उत्तरी मिंडानाओ द्वीप पर राहत सामग्री लेकर जा रहा सेना का 'सुपर ह्यूई' हेलीकॉप्टर मंगलवार शाम दुर्घटनाग्रस्त हो गया। सेना के प्रवक्ता ने बताया कि हेलीकॉप्टर बुटुअन तटीय शहर की ओर जा रहा था, लेकिन मौसम की खराबी के कारण संपर्क टूट गया। हादसे में सवार कर्मियों की स्थिति के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं मिल पाई है।

तूफान 'कलमाएगी' की तीव्रता फिलीपींस के इतिहास में दर्ज कई भयंकर तूफानों की बराबरी करती बताई जा रही है। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि अगले 24 घंटे में बारिश और भूस्खलन का खतरा बना रहेगा। तटीय इलाकों में बिजली गुल है, संचार नेटवर्क ध्वस्त हो चुका है और पीने के पानी की भारी किल्लत शुरू हो गई है।

संयुक्त राष्ट्र ने फिलीपींस सरकार से संपर्क साधते हुए मानवीय सहायता भेजने की घोषणा की है। जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत ने भी राहत सामग्रियां भेजने की पेशकश की है। फिलीपींस की राजधानी मनीला में हजारों लोग रक्तदान और राहत कोष में मदद के लिए एकजुट हो रहे हैं। इस प्राकृतिक आपदा ने फिर से यह साबित कर दिया है कि जलवायु परिवर्तन का असर अब सिर्फ चेतावनी नहीं, बल्कि विनाश की वास्तविकता बन चुका है। सेबू और आसपास के क्षेत्रों में फैले मलबे, बाढ़ और मृत देहों की तस्वीरें आज पूरी दुनिया को झकझोर रही हैं — एक ऐसा मंजर, जिसमें प्रकृति का प्रकोप और मानव असहायता दोनों साथ दिखाई दे रहे हैं।

स्पेशियलिटी स्टील उत्पादन को नई रफ्तार — पीएलआई योजना के तीसरे चरण की शुरुआत, अब तक 43 हजार करोड़ का निवेश

नई दिल्ली। भारत के इस्पात उद्योग में तकनीकी गुणवत्ता और आत्मनिर्भरता को नई दिशा देने के लिए केंद्र सरकार ने सोमवार को स्पेशियलिटी स्टील के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के तीसरे चरण की औपचारिक शुरुआत की। इस योजना के अंतर्गत अब तक कुल 43,874 करोड़ रुपये का निवेश प्राप्त हो चुका है और इसके जरिये 13,000 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिला है। नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय इस्पात एवं भारी उद्योग मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी ने तीसरे चरण का शुभारंभ करते हुए कहा कि यह योजना भारत को 'वैल्यू ऐडेड स्टील' के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व दिलाने की दिशा में एक ठोस कदम है। उन्होंने बताया कि देश में इस्पात उद्योग सिर्फ बुनियादी ढांचे तक सीमित नहीं है, बल्कि रक्षा, रेलवे, एयरोस्पेस और ऊर्जा जैसे रणनीतिक क्षेत्रों में भी इसकी भूमिका लगातार बढ़ रही है। मंत्री ने कहा कि भारत आज विश्व का दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक देश है, लेकिन स्पेशियलिटी स्टील की श्रेणी में अभी भी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए पर्याप्त क्षमता विकसित करने की जरूरत है। उन्होंने कहा, "पीएलआई योजना के तीसरे चरण से यह लक्ष्य हासिल करने में बड़ी मदद मिलेगी। इससे न केवल निवेश आकर्षित होगा, बल्कि आयात में कमी और निर्यात में

वृद्धि भी होगी।"

इस्पात मंत्रालय की ओर से जारी जानकारी के अनुसार, योजना के इस चरण में कुल 22 श्रेणियों के उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों को शामिल किया गया है। इनमें सुपर अलॉय, सीआरजीओ स्टील, अलॉय फोर्जिंग, स्टेनलेस स्टील (लॉन्ग और फ्लैट दोनों प्रकार), टाइटेनियम अलॉय, कोटेड स्टील और इलेक्ट्रिकल स्टील जैसे उत्पाद प्रमुख हैं। योजना के अंतर्गत पात्र कंपनियों को उनके उत्पादन स्तर के अनुसार 4 से 15 प्रतिशत तक का प्रोत्साहन दिया जाएगा। यह प्रोत्साहन वित्त वर्ष 2025–26 से अगले पांच वर्षों तक लागू रहेगा और भुगतान 2026–27 से शुरू किया जाएगा। सरकार ने 2021 में इस योजना को मंजूरी दी थी, जिसके लिए कुल 6,322 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है। उस समय योजना का उद्देश्य स्पष्ट किया गया था — भारत में हाई-वैल्यू स्टील का उत्पादन बढ़ाना, विदेशी आयात पर निर्भरता घटाना और देश को वैश्विक स्टील मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में विकसित करना। सरकार ने इस योजना के आधार वर्ष को संशोधित कर अब 2024–25 कर दिया है ताकि उद्योग जगत को अपने निवेश और उत्पादन लक्ष्यों के अनुरूप पर्याप्त समय मिल सके।

इस्पात मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने बताया कि अब तक पीएलआई योजना के तहत देशभर में कई बड़े प्रोजेक्ट स्वीकृत किए जा चुके हैं, जिनमें झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र प्रमुख हैं। ये प्रोजेक्ट देश में विशेष ग्रेड स्टील के निर्माण को गति देंगे और भारत की औद्योगिक प्रतिस्पर्धा को विश्वस्तर पर सशक्त बनाएंगे।

कार्यक्रम में उपस्थित उद्योग प्रतिनिधियों ने सरकार के इस कदम की सराहना की और कहा कि इससे भारत न केवल आत्मनिर्भर बनेगा, बल्कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में 'मेड इन इंडिया स्टील' की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

विशेषज्ञों के अनुसार, यदि योजना के सभी चरण समय पर लागू हुए तो भारत अगले पाँच वर्षों में स्पेशियलिटी स्टील के निर्यात को दोगुना कर सकता है और 2030 तक इस क्षेत्र में 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक का अतिरिक्त निवेश आकर्षित किया जा सकता है। देश में बढ़ते बुनियादी ढांचे के प्रोजेक्ट्स, हरित ऊर्जा मिशन और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में यह योजना भारत के औद्योगिक भविष्य को नई चमक देने की क्षमता रखती है।

उलानबटोर में फंसे भारतीयों की घर वापसी आज — एयर इंडिया का विशेष विमान करेगा 228 यात्रियों को सुरक्षित रवाना

नई दिल्ली। मंगोलिया की राजधानी उलानबटोर में फंसे 228 भारतीय यात्रियों की जल्द ही अपने देश वापसी होने जा रही है। एयर इंडिया ने मंगलवार को विशेष राहत अभियान की घोषणा करते हुए बताया कि दिल्ली से एक विशेष विमान उलानबटोर रवाना किया जा रहा है, जो बुधवार सुबह सभी यात्रियों को लेकर वापस लौट आएगा। एयर इंडिया ने कहा कि यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए उनके लिए पूरी व्यवस्था की गई है।

एयर इंडिया के प्रवक्ता ने बताया, "हमारे यात्रियों और चालक दल की सुरक्षा सर्वोपरि है। हमने सभी आवश्यक प्रबंध पूरे कर लिए हैं ताकि यात्रियों को जल्द और सुरक्षित भारत लाया जा सके।"

घटना 2 नवंबर की है, जब सैन फ्रांसिस्को से दिल्ली आ रही एयर इंडिया की उड़ान संख्या AI-174 को बीच सफर में अचानक तकनीकी खामी आने के कारण उलानबटोर एयरपोर्ट पर आपात रूप से उतारना पड़ा। विमान में कुल 245 लोग सवार थे — जिनमें 228 यात्री और 17 चालक दल के सदस्य शामिल थे। विमान के उतरने के बाद उसे सुरक्षा जांच के लिए रनवे पर खड़ा कर दिया गया, और यात्रियों को एयरपोर्ट से नजदीकी होटलों में ठहराया गया। मंगोलिया में भारतीय दूतावास ने तुरंत सक्रिय भूमिका निभाई। दूतावास ने न केवल यात्रियों के लिए ठहरने, भोजन और चिकित्सा सहायता की व्यवस्था की, बल्कि स्थानीय प्रशासन के साथ समन्वय बनाकर एयर इंडिया की विशेष राहत उड़ान को शीघ्र मंजूरी दिलवाई। भारतीय राजदूत ने खुद एयरपोर्ट पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और यात्रियों को भरोसा दिलाया कि उन्हें जल्द ही भारत पहुंचा दिया जाएगा।

एयर इंडिया ने बताया कि राहत उड़ान AI-183 मंगलवार दोपहर दिल्ली से उड़ान भरेगी और बुधवार सुबह उलानबटोर से यात्रियों को लेकर लौटेगी। विमान में तकनीकी विशेषज्ञों की एक अतिरिक्त टीम भी भेजी जा रही है, जो डायवर्ट हुई फ्लाइट की स्थिति की जांच करेगी।

उलानबटोर एयरपोर्ट पर रुके यात्रियों ने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर भारतीय दूतावास और एयर इंडिया के त्वरित सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। कई यात्रियों ने बताया कि एयरलाइन स्टाफ लगातार संपर्क में रहा और उन्हें हर स्थिति की जानकारी समय-समय पर दी जाती रही।

यह पहली बार नहीं है जब एयर इंडिया ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राहत उड़ान चलाई हो। इससे पहले भी कंपनी ने यूक्रेन, सूडान और अफगानिस्तान में फंसे भारतीयों को विशेष अभियानों के तहत वापस लाने की जिम्मेदारी निभाई थी। एयरलाइन ने कहा कि यह उसका "राष्ट्रीय कर्तव्य" है कि संकट में फंसे हर भारतीय को सुरक्षित घर लाया जाए। कुल मिलाकर, इस पूरे अभियान ने फिर से साबित किया है कि चाहे बात किसी भी कोने की हो, भारत अपने नागरिकों को सुरक्षित घर लाने में कभी पीछे नहीं रहता। बुधवार सुबह जब विशेष विमान दिल्ली उतरेगा, तो उसके साथ लौटेंगे 228 मुस्कुराते चेहरे और एक और सफल राहत मिशन की कहानी।

पूर्व प्रधानमंत्री को शरण देने पर भड़का पेरू, मेक्सिको से तोड़े राजनयिक संबंध

लीमा। दक्षिण अमेरिकी राजनीति में एक नया कूटनीतिक विवाद गहराता जा रहा है। पेरू की पूर्व प्रधानमंत्री बेटसी शावेज द्वारा मेक्सिको दूतावास में शरण लेने के बाद पेरू सरकार ने सोमवार को मेक्सिको के साथ अपने राजनयिक संबंध तोड़ने की घोषणा कर दी। पेरू सरकार ने इसे देश की संप्रभुता के विरुद्ध एक "शत्रुतापूर्ण कदम" बताते हुए मेक्सिको पर अपने आंतरिक मामलों में बार-बार हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया है।

पेरू के विदेश मंत्री ह्यूगो डे जेला ने लीमा में प्रेस वार्ता के दौरान कहा कि सोमवार को यह सूचना मिली कि शावेज मेक्सिको दूतावास में छिपी हुई हैं। उन्होंने कहा, "मेक्सिको के वर्तमान और पूर्व राष्ट्रपतियों ने कई बार पेरू की न्यायिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं पर टिप्पणी की है। यह हमारे राष्ट्र की स्वायत्तता पर हमला है, और ऐसे में संबंध समाप्त करना अपरिहार्य हो गया था।"

बेटसी शावेज, जो कभी पेरू के पूर्व राष्ट्रपति पेड्रो कास्टिलो की करीबी मानी जाती थीं, पर 2022 के अंत में सत्ता के दुरुपयोग और साजिश रचने के आरोप लगे थे। उस समय कास्टिलो ने संसद भंग करने की कोशिश की थी, जिसके तुरंत बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। उसी मामले में शावेज पर भी संलिप्तता का आरोप लगा और जून 2023 तक वे जेल में रहीं। अदालत से मिली अस्थायी रिहाई के बाद वह मुकदमे की प्रक्रिया में शामिल थीं, पर अब अचानक उनका गायब हो जाना और मेक्सिको दूतावास में शरण लेना पेरू की राजनीति में नई हलचल पैदा कर गया है।

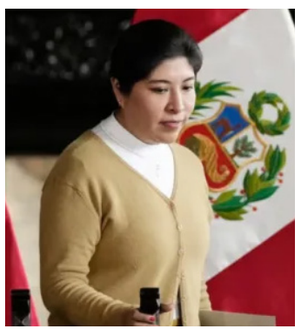

पेरू सरकार का आरोप है कि शावेज ने न्यायिक कार्रवाई से बचने और संभावित गिरफ्तारी से खुद को बचाने के लिए मेक्सिको की शरण ली। सरकार ने कहा कि यह कदम पेरू की न्याय प्रणाली का

अपमान है। विदेश मंत्री ह्यूगो डे जेला ने कहा, "हमने मेक्सिको सरकार को पहले भी चेताया था कि वे हमारे मामलों में हस्तक्षेप न करें, लेकिन उन्होंने बार-बार हमारी सीमाओं का उल्लंघन किया है। अब यह स्थिति अस्वीकार्य हो चुकी है।"

शावेज के वकील राउल नोब्लेसिला ने स्थानीय रेडियो चैनल आरपीपी से कहा कि उन्हें कई दिनों से अपनी मुवक्किल से संपर्क नहीं हो पा रहा है। उन्होंने कहा, "मुझे इस बात की जानकारी नहीं थी कि वे मेक्सिको दूतावास में शरण ले चुकी हैं। अगर यह सही है, तो यह संकेत है कि उन्हें अपनी सुरक्षा को लेकर गंभीर खतरा महसूस हो रहा था।"

मेक्सिको की ओर से इस घटना पर अब तक कोई औपचारिक बयान जारी नहीं किया गया है। लेकिन पेरू के राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह विवाद दोनों देशों के बीच संबंधों को दशकों पीछे धकेल सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह मामला सिर्फ एक व्यक्ति की शरण का नहीं, बल्कि दो विचारधाराओं के टकराव का प्रतीक है — एक तरफ वामपंथी रुझान वाले देश, जिनमें मेक्सिको अग्रणी है, और दूसरी तरफ पेरू जैसे देश, जो सत्तावादी हस्तक्षेप के खिलाफ सख्त रुख अपनाए हुए हैं।

संपादकीय

विश्व विजेता बेटियां

रविवार को भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने वो इतिहास रचा, जिसका दो दशक से इंतजार था। एक दिवसीय क्रिकेट का वर्ल्ड कप जीतकर उन्होंने उस कमी को पूरा किया, जो साल 2005 और 2017 में फाइनल में पहुंचकर भी हासिल न हो सकी थी। ऐसे वक्त में जब भारतीय महिला क्रिकेट टीम को खिताबी दौड़ में कमजोर माना जा रहा था, उसने सात बार की चैंपियन आस्ट्रेलिया टीम को सेमीफाइनल के एक रोमांचक मुकाबले में हरा दिया था। मुकाबले में मुंबई की जेमिमा रॉड्रिग्स ने 127 रन की तूफानी यादगार पारी खेली। लगता था शुरुआत में कई मैच हारने वाली भारतीय महिला टीम ने अपनी ऊर्जा फाइनल मुकाबले के लिये बचा रखी थी, जिसमें उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की टीम को 52 रन से हरा दिया। रविवार की रात हरमनप्रीत कौर की कप्तानी ने पासा ही पलट दिया। फिर उनकी टीम ने नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में चालीस हजार से ज्यादा दर्शकों के बीच जीत का जश्न जमकर मनाया। इस जुनूनी जश्न की वे हकदार भी थीं। साथ ही देश के एक अरब चालीस करोड़ लोगों को भी जीत के जश्न में डुबो दिया। लोग इस साल होने वाले कई दुखांत घटनाक्रमों को भुला इस जीत की लय में झूम उठे। यह सुखद आश्चर्य ही था कि टीम ने लगातार तीन हार झेलने के बाद टूर्नामेंट में दमदार वापसी की। सेमीफाइनल में लोग सात बार की चैंपियन आस्ट्रेलिया के खिलाफ भारतीय टीम को कमतर आंक रहे थे। सुखद आश्चर्य देखिये कि फाइनल मुकाबले में हरियाणा की उस शैफाली वर्मा ने करिश्माई पारी खेली, जो विश्व कप के शुरू होने से पहले टीम का हिस्सा भी नहीं थी। उसने अपने चयन को तार्किक साबित किया। इसी तरह दीप्ति शर्मा ने भी शानदार खेल का परिचय दिया। निश्चय ही महिला क्रिकेट टीम की यह शानदार जीत देश की उन लाखों बेटियों के सपनों को नयी ऊंचाइयां देगी, जो अपना आसमान हासिल करना चाहती हैं। निस्संदेह, विश्वकप में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की शानदार जीत के दूरगामी परिणाम होंगे। इस खेल में टीम दीर्घकालिक वर्चस्व कायम रख सकती है। दरअसल, अब तक महिला क्रिकेट को दोयम दर्जे का माना जाता रहा है। दरअसल, जब से महिला खिलाड़ियों को पुरुष खिलाड़ियों के समान वेतन मिलने लगा और उन्हें आईपीएल-शैली की टी-20 लीग में दमखम दिखाने का मौका मिला, टीम के प्रदर्शन में अभूतपूर्व सुधार आया। धीरे-धीरे वे पुरुष क्रिकेट के सितारों की तरह आभा बिखेरने लगी। हालांकि, आगे की राह इतनी भी आसान नहीं है, उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। फिलहाल उनके पास इस कामयाबी का जश्न मनाने का मौका है। उल्लेखनीय है कि टीम में कई ऐसी खिलाड़ी हैं जिन्होंने तमाम आर्थिक-सामाजिक चुनौतियों का मुकाबला करके अपनी जगह बनायी। वे तपती पगडंडियों से गुजरने वाली बेटियों के लिये प्रेरणास्रोत हैं। इन खिलाड़ियों ने मैदान से पहले निजी जीवन में बड़ा संघर्ष किया। बेहद जटिल पृष्ठभूमि से आने के बावजूद वे विश्व विजेता टीम का हिस्सा बनी हैं। उनके साथ अभ्यास मैच खेलने के लिये लड़कियां नहीं होती थी, अतः वे शुरुआती क्रिकेट लड़कों की टीम के साथ खेलती थीं। उनके माता-पिता को समाज की छींटाकशी का भी शिकार होना पड़ता था। मध्यप्रदेश की क्रांति गौड़ ने आर्थिक बदहाली का जीवन जिया और प्रैक्टिस मैच के लिये पैसे की मदद न मिलने पर मां ने गहने तक बेचने पड़े। वक्त बदला है और आज मध्य प्रदेश सरकार ने उसे एक करोड़ का पुरस्कार देने की घोषणा की है। स्पिनर राधा यादव का परिवार मुंबई के कांदिवली में रहता है और उसके पिता सब्जी बेचते रहे हैं। उनकी प्रतिभा पहचानकर क्रिकेटर प्रफुल्ल नाइक ने उसके परिजनों को क्रिकेट खेलने के लिये मनाया। संगरूर जिले की रहने वाली सफल गेंदबाज अमनजोत के, पेशे से कारपेंटर पिता भूपेंदर सिंह ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। उन्होंने अपना कामधंधा दांव पर लगाया। इसी तरह हिमाचल के एक किसान परिवार से आने वाली तेज गेंदबाज रेणुका ठाकुर ने अपने दिवंगत पिता के सपने को पूरा किया। निस्संदेह, इन लड़कियों की कामयाबी न केवल समाज में लड़कियों के प्रति नजरिया बदलेगी, बल्कि उन जैसी लाखों लड़कियों को क्रिकेट में भविष्य आजमाने के लिये भी प्रेरित करेगी।

प्रदर्शन का जरिया बनी राजनीति, मतदाताओं की चिंता किसी को नहीं

> मीडिया को भी अपनी जिम्मेदारी समझकर जांच-पड़ताल और तथ्यपरक पत्रकारिता को बढ़ावा देना होगा। यदि लोकतंत्र के आत्मा को बचाना चाहते हैं तो जनता को भी रवैया बदलना होगा। भारत का लोकतंत्र विश्व की सबसे बड़ी नागरिक-भागीदारी का मंच है। यह मंच तभी सार्थक है जब नीति, प्रतिस्पर्धा, स्कूल, अस्पताल, रोजगार, स्थानीय बुनियादी ढांचा केंद्र में हों। सादगी कोई सजावट की वस्तु नहीं, भारतीय राजनीति का आत्मा है। इसको सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी पार्टियों, संस्थाओं और सबसे बढ़कर मतदाताओं की है।

महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री, जयप्रकाश नारायण आदि ने भारतीय राजनीति में सरल जीवन, सादगी, संयम और उच्च विचार की भावना को बढ़ावा दिया, लेकिन बीते दो-तीन दशकों में भारतीय लोकतंत्र का मूल उद्देश्य प्रतिनिधित्व, जवाबदेही और लोकसेवा की जगह बाहरी आडंबर, चमक-दमक और महंगे प्रचार तंत्र की ओर झुका हुआ दिखता है। पहले नेता साधारण कारों से यात्रा करते थे, आज उनके काफिले में 40-50 महंगी गाड़ियां होना सामान्य है।

नेताओं के साथ दौड़ते वाहनों की कतारें, हूटर, कमांडो स्टाइल सुरक्षा और समर्थकों के बीच शक्ति-प्रदर्शन का माहौल अपने आप में नई तरह की राजनीति का संदेश देता है। राजनीति अब विचार, नीति और काम की जगह दिखावे की भाषा बोल रही है। यह दृश्य अब आम हो गया है, पर क्या यह लोकतंत्र की भावना को दर्शाता है या एक नई राजनीति की पहचान है, जहां सत्ता प्रदर्शन का माध्यम बन गई है?

इन दिनों बिहार में विधानसभा का चुनाव हो रहा है। राज्य में चुनाव प्रचार के नाम पर पैसे और प्रभाव का प्रदर्शन हो रहा है। इसे बाहुबली छवि वाले प्रत्याशी खास तौर पर कर रहे हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार प्रथम चरण के मतदान के लिए खड़े हुए कुल 1303 उम्मीदवारों में से 423 (32 प्रतिशत) ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए हैं। इनमें 354 उम्मीदवारों (27 प्रतिशत) ने बताया है कि उनके खिलाफ गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। इससे पहले 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में 241 विजेता सदस्यों में से 163 (68 प्रतिशत) ने अपने खिलाफ आपराधिक मामलों की घोषणा की थी। यह आंकड़ा 2015 में 58 प्रतिशत था।

एसोसिएशन फार डेमोक्रेटिक रिफार्म्स (एडीआर) के विश्लेषण के अनुसार लोकसभा में 543 सदस्यों में से 251 सदस्य

ऐसे हैं, जिन पर आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। इनमें से 170 (31 प्रतिशत) के खिलाफ तो गंभीर आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। विधानसभाओं का परिदृश्य भी अलग नहीं है। 28 राज्यों एवं तीन केंद्रशासित प्रदेशों के 4092 विधायकों में से 1861 (45 प्रतिशत) ने अपने हलफनामे में खुद के खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए हैं। राजनीति का अपराधीकरण चुनाव दर चुनाव संस्थागत होता जा रहा है। वर्तमान लोकसभा में 93 प्रतिशत सदस्य करोड़पति हैं। 2009 में यह आंकड़ा 58 प्रतिशत, 2014 में 82 प्रतिशत और 2019 में 88 प्रतिशत था।

2024 में पुनः चुनाव लड़ रहे सांसदों की औसत परिसंपत्तियां पांच वर्षों में 43 प्रतिशत बढ़ीं। यह आंकड़ा बताता है कि सत्ता तक पहुंच आर्थिक पूंजी को तेजी प्रदान करती है। कारों के काफिले की लंबाई और 'शो-आफ' का बजट यहीं से आता है। यह बदलाव नई राजनीति की पहचान है, जहां नेता राजा जैसे दिखते हैं। लोकतांत्रिक राजनीति में भीड़ और जुलूस का परंपरागत स्थान रहा है, परंतु आज यह केवल समर्थन नहीं दर्शाता, बल्कि प्रभुत्व का संकेत देता है।

गाड़ियों का लंबा काफिला यह 'आश्वस्ति' देता है कि नेता 'ताकतवर' है और 'अपने लोगों' की 'रक्षा' कर सकता है। यही मनोविज्ञान चुनाव-पूर्व डर और समर्पण पैदा करता है। इंटरनेट मीडिया के ड्रोन शाट्स और रील्स ने इसे और बढ़ाया है। काफिला जितना बड़ा और सिनेमाई दिखे, नेता को उतना ज्यादा बड़ा माना जाता है। बड़े काफिले, भव्य मंच, चौबीसों घंटे ब्रांडिंग, एआइ संचालित वीडियो और डिजिटल विज्ञापनबाजी अब राजनीति का केंद्रीय आधार बन चुके हैं। यह टिकट वितरण, उम्मीदवारी, नीति-निर्माण और मतदाता को भी प्रभावित करते है। इसी खिड़की से अपराध और धनशक्ति का गठजोड़ लोकतंत्र के भीतर न्यू नार्मल बनता दिख रहा है।

सेंटर फार मीडिया स्टडीज ने 2024 के लोकसभा चुनाव का कुल अनुमानित खर्च एक लाख करोड़ रुपये से भी अधिक आंका। तब 9,000 करोड़ के आसपास की नकदी, शराब, ड्रग्स, बहुमूल्य धातुएं और 'फ्रीबीज' की जब्तियां हुई थीं। यह आंकड़ा प्रचार-युद्ध के शीर्ष-स्तर को परिभाषित करता है और यह भी इंगित करता है कि निर्वाचन की प्रक्रिया भारत में विश्व की सबसे महंगी लोकतांत्रिक कवायदों में से एक बन चुकी है। सही मायने में यह चुनावी वित्त और आपराधिक नेटवर्क के गठजोड़ की गवाही है।

जब चुनावी दान नीति-निर्माण को प्रभावित करे तो जनहित का स्थान 'रिटर्न-आन-इन्वेस्टमेंट' ले ही लेगा। नियमों को सख्ती से लागू करके इस संरचना को बदलना होगा। हमें राजनीति में गांधी, शास्त्री और पटेल जैसे आदर्शों की पुनर्स्थापना करनी होगी। दलों को टिकट बांटने में योग्यता, चरित्र और सेवा को तरजीह देनी चाहिए, न कि चमक-धमक को। जब अपराधी-नेटवर्क और धनशक्ति टिकट-वितरण का आधार बनेंगे तो ईमानदार कार्यकर्ता हतोत्साहित होंगे।

मीडिया को भी अपनी जिम्मेदारी समझकर जांच-पड़ताल और तथ्यपरक पत्रकारिता को बढ़ावा देना होगा। यदि लोकतंत्र के आत्मा को बचाना चाहते हैं तो जनता को भी रवैया बदलना होगा। भारत का लोकतंत्र विश्व की सबसे बड़ी नागरिक-भागीदारी का मंच है। यह मंच तभी सार्थक है जब नीति, प्रतिस्पर्धा, स्कूल, अस्पताल, रोजगार, स्थानीय बुनियादी ढांचा केंद्र में हों। सादगी कोई सजावट की वस्तु नहीं, भारतीय राजनीति का आत्मा है। इसको सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी पार्टियों, संस्थाओं और सबसे बढ़कर मतदाताओं की है।

प्रेरणा

ब्रह्मचर्य का तेज: महर्षि अष्टावक्र की अमर परीक्षा और विजय की कथा

प्राचीन भारत में जब वेदों की गूंज चारों दिशाओं में फैल रही थी और ऋषि-मुनियों का तप धरती को पवित्र बना रहा था, तब ज्ञान और संयम ही जीवन का सर्वोच्च आदर्श माने जाते थे। उसी युग में एक अद्वितीय तेजस्वी ऋषि हुए — महर्षि अष्टावक्र। उनका शरीर बाल्यकाल से ही विकृत था, लेकिन उनके भीतर ऐसा आत्मबल और ब्रह्मज्ञान था कि देवलोक तक में उनकी ख्याति फैल चुकी थी। वे केवल विद्या के धनी ही नहीं, बल्कि आत्मसंयम और ब्रह्मचर्य के मूर्त रूप थे। एक दिन महर्षि अष्टावक्र ने विचार किया कि जीवन के पूर्णत्व के लिए गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करना आवश्यक है। उन्होंने यह बात महर्षि वदान्य से कही और विनम्रतापूर्वक निवेदन किया—"गुरुदेव, आपकी कन्या के गुण और शील के विषय में मैंने सुना है। यदि आप अनुमति दें, तो मैं उनसे विवाह करना चाहता हूँ।" महर्षि वदान्य ने उनकी बात ध्यानपूर्वक सुनी और गंभीर स्वर में बोले—"पुत्र अष्टावक्र, तुम्हारा ज्ञान अतुलनीय है, परंतु विवाह केवल शरीर या विचार का मिलन नहीं, यह आत्माओं का संगम है। मेरी कन्या को पाने के लिए तुम्हें एक कठिन परीक्षा से गुजरना होगा।" अष्टावक्र ने आदरपूर्वक कहा—"गुरुदेव, आज्ञा दीजिए। ब्रह्मचर्य और तप के मार्ग में कोई भी परीक्षा मेरे लिए सौभाग्य होगी।" वदान्य बोले—"तुम उत्तर दिशा की ओर जाओ। हिमालय की चोटियों को पार करते हुए कैलास पर्वत तक पहुँचो। वहाँ एक वृद्ध तपस्विनी रहती हैं। उनके दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करो और फिर लौट आओ। जो यह यात्रा पूर्ण करेगा, वही मेरी कन्या के योग्य है।" महर्षि अष्टावक्र ने बिना क्षण गंवाए यात्रा प्रारंभ की। उन्होंने संकल्प किया कि वे न केवल इस भौतिक यात्रा को, बल्कि इंद्रिय और मोह की भी परीक्षा को पार करेंगे। रास्ते में बर्फीले तूफान, भयंकर पशु, तीव्र ठंड और भूख-प्यास के बावजूद उनका मन स्थिर रहा। उनके मुख पर शांत स्मित था और ध्यान में केवल भगवान के नाम की ध्वनि। कई दिनों की कठिन यात्रा के बाद वे हिमालय की गहराइयों में पहुँचे, जहाँ अचानक एक अप्रतिम सुंदरी प्रकट हुई। उसका रूप इतना मोहक था कि स्वर्ग की अप्सराएँ भी उसके सम्मुख फीकी पड़ जातीं। वह मधुर स्वर में बोली—"महर्षि, इतनी ठंडी और खतरनाक जगह पर अकेले क्यों जा रहे हैं? मैं आपकी सहायता करना चाहती हूँ। आप थके हैं, विश्राम कर लीजिए।" अष्टावक्र ने शांत दृष्टि से उसकी ओर देखा और बोले—"देवि, तुम्हारा स्वागत है, परंतु मैं तपस्वी हूँ। मेरा लक्ष्य भोग नहीं, त्याग है। मुझे तुम्हारी नहीं, केवल आत्मज्ञान की आवश्यकता है। तुम मुझे माता के समान प्रतीत होती हो। कृपया आशीर्वाद दो और मुझे मेरे मार्ग पर जाने दो।" परंतु वह सुंदरी केवल साधारण स्त्री नहीं थी। वह देवताओं द्वारा भेजी गई एक मायावी शक्ति थी, जो अष्टावक्र के ब्रह्मचर्य की परीक्षा लेने आई थी। उसने अनेक रूप धारण किए—कभी रोते हुए आग्रह किया, कभी मधुर नृत्य से मोह जगाया, कभी रुदन और दया का अभिनय किया। किंतु अष्टावक्र का मन पर्वत की चोटी की तरह अटल रहा। उनकी दृष्टि में उस स्त्री का कोई भौतिक रूप नहीं था, केवल ईश्वर का प्रतिबिंब था। अंततः वह दिव्य नारी अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट हुई। उसके शरीर से प्रकाश निकल रहा था और वातावरण में सुगंध फैल गई। वह बोली—"अष्टावक्र! तुमने देवलोक की परीक्षा को पार कर लिया है। तुम्हारा ब्रह्मचर्य देवताओं को भी विस्मित कर गया है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश और इन्द्र सभी ने तुम्हें आशीर्वाद दिया है। अब तुम वदान्य की कन्या के योग्य हो। तुम्हारा विवाह केवल सांसारिक बंधन नहीं होगा, बल्कि यह संयम, तप और सत्य की विजय का प्रतीक बनेगा। तुम्हारी संतान धर्म और ज्ञान के मार्ग पर चलने वाली होगी।" यह कहकर वह नारी अदृश्य हो गई। अष्टावक्र ने मौन होकर ईश्वर को प्रणाम किया और अपनी यात्रा पूरी की। जब वे वदान्य के आश्रम लौटे, तो उनके शरीर से ऐसा तेज निकल रहा था जैसे सूर्य की किरणें स्वयं उनके भीतर समा गई हों। महर्षि वदान्य ने उन्हें देखकर कहा—"पुत्र, तुम्हारा मुखमंडल सब कुछ कह रहा है। जिसने अपने इंद्रियों को जीत लिया, वही सच्चा विजेता है। तुम्हारे ब्रह्मचर्य ने न केवल देवताओं को, बल्कि मुझे भी प्रसन्न किया है। मैं अपनी कन्या तुम्हें ससम्मान सौंपता हूँ।" अष्टावक्र और वदान्य की कन्या का विवाह बड़े विधि-विधान से हुआ। यह केवल दो आत्माओं का मिलन नहीं था, बल्कि यह तप, संयम और आत्मविजय की कथा का समापन था। आज भी जब कोई साधक काम, मोह या भोग की अग्नि में तपता है, तो महर्षि अष्टावक्र की यह कथा उसे स्मरण दिलाती है कि ब्रह्मचर्य कोई बंधन नहीं, बल्कि वह शक्ति है जो मनुष्य को देवत्व की ओर उठाती है। जो अपने भीतर की इच्छाओं को वश में कर लेता है, वह संसार पर नहीं, स्वयं पर शासन करता है — और यही सच्ची विजय है।

इंसान को इंसान बनाने वाला हो धर्म

अक्सर यानी जब भी धर्म या मज़हब के नाम पर इंसानियत को शर्मसार करने वाला कुछ घटता है तो उस अनाम शायर की यह पंक्ति दुहरा बैठता हूं—मज़हब बेनाम हो जाये तो सुकूं मिले। देखा जाये तो सारा झगड़ा तो नाम का ही है। किसी को हिंदू या मुसलमान नाम देकर हम अनायास उसे इंसानियत की ऊंचाई से नीचे गिरा देते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि हिंदू या मुसलमान से पहले भी वह कुछ था। यही 'कुछ' उसकी असली पहचान है। मंदिर में आरती करने से पहले, मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से पहले या फिर गिरजाघर में 'गॉड' को याद करने से पहले हम सब इंसान हैं, यह बात पता नहीं हम क्यों भूल जाते हैं। ज़रा सा सोचने की बात है कि जब कोई पैदा होता है तो उसका किसी धर्म को मानने वाला होना इस बात से तय हो जाता है कि वह किस परिवार में पैदा हुआ या हुई। और वह किस परिवार में पैदा हुआ इसमें पैदा होने वाले की कोई भूमिका नहीं होती। ऐसे में यह सवाल तो उठना ही चाहिए न कि यह कैसा आधार है किसी के हिंदू या मुसलमान या किसी और धर्म को मानने वाला होने का? सवाल यह भी है कि जब किसी का धर्म तय होने में उसकी कोई भूमिका ही नहीं है तो धर्म के नाम पर आपस में झगड़ने की क्या तुक है? और यह 'झगड़ा' भी कितने बचकाने तरीके से होता है। हाल ही महाराष्ट्र के पुणे से एक खबर आयी थी। खबर पेशवाओं के एक किले शनिवारवाड़ा से जुड़ी है। अब यह किला प्राचीन स्मारक के रूप में संरक्षित है। पेशवाई इतिहास के इस स्मारक को देखने रोज़ अनेक पर्यटक पहुंचते हैं। ये पर्यटक किसी भी धर्म के मानने वाले हो सकते हैं। कुछ ही दिन पहले कुछ मुसलमान महिलाएं यह किला देखने पहुंची थीं। पता नहीं क्या सोच कर वे वहीं एक जगह चादर बिछाकर नमाज़ पढ़ने बैठ गयीं। कोई कहीं भी बैठकर अपने प्रभु को याद करे इसमें भला किसी को क्या आपत्ति होनी चाहिए। पर इस कृत्य से कुछ लोगों को आपत्ति है। पता नहीं क्यों किसी को यह ज़रूरी लगा कि नमाज़ पढ़ती उन महिलाओं का वीडियो बनाकर वायरल किया जाये। सोशल मीडिया पर यह दृश्य देखकर कुछ लोग अप्रसन्न हुए। उन लोगों को लगा कि शनिवारवाड़ा में चार-छह लोगों द्वारा नमाज पढ़ने से वह जगह अपवित्र हो गयी है! उन्होंने वहां पहुंचकर गौमूत्र से उस जगह का शुद्धीकरण किया। यह बात समझना आसान नहीं है कि 'खुदा' का नाम लेने से 'ईश्वर' की वह जगह अपवित्र कैसे हो गयी? हमारा धर्म तो यह मानता है कि कण-कण में ईश्वर बसता है, पर धर्म को मानने वाले हम यह नहीं मानना चाहते कि ईश्वर के शुद्धीकरण की कल्पना ही अपने आप में ओछे सोच वाली बात है।राष्ट्रपिता महात्मा गांधी अपने आश्रम में सर्वधर्म प्रार्थना किया करते थे। सारे आश्रमवासी मिलकर सब धर्मों की प्रार्थनाएं बोला करते थे। इन्हीं प्रार्थनाओं में बापू का प्रिय भजन भी था-- रघुपति राघव राजाराम...। दांडी मार्च के दौरान बापू का यह भजन बहुत लोकप्रिय हुआ था। कहते हैं इसकी रचना संत प्रवर लक्ष्मणाचार्य ने की थी। लेकिन बापू जिस भजन को गाया करते थे, गवाया करते थे, उसमें संभवतः उन्होंने ही कुछ जोड़ा अवश्य था। वह जोड़ा हुआ अंश है-- 'ईश्वर अल्ला तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान।' भला इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती थी! आज़ादी की लड़ाई के दौरान बहुत लोकप्रिय हुआ था यह भजन। आज भी यह भजन धार्मिक कार्यक्रमों से लेकर राजनीतिक सभाओं में भी गाया जाता है। कुछ अर्सा पहले पटना की एक राजनीतिक सभा में एक भोजपुरी गायिका जब इसे गा रही थीं तो कुछ लोगों ने प्रतिवाद किया। उनकी शिकायत थी कि मूल भजन में ईश्वर-अल्ला वाली बात नहीं थी, गांधीजी ने क्यों जोड़ी? सभा में इस बात को लेकर हंगामा मच गया था। गायिका को माफी मांग कर स्थिति को संभालने की कोशिश करनी पड़ी थी! गांधीजी ने जब रघुपति राघव वाले उस भजन में ईश्वर अल्लाह को एक बताने वाली बात जोड़ी होगी, तो निश्चित रूप से इसके पीछे सांप्रदायिकता को नकारने का भाव रहा होगा। गांधीजी के जीवन काल में इस बात का शायद ही कहीं विरोध हुआ होगा। विरोध होता तो वे निश्चित रूप से धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देने वालों को समझाते कि ईश्वर अल्लाह में भेद करके हम न केवल अपने अज्ञान को प्रकट करते है, बल्कि मनुष्यता के विरुद्ध एक अपराध भी करते हैं। नमाज़ या प्रार्थना या भजन का एक ही मतलब है। इनके माध्यम से ही हम उस सर्वशक्तिमान की वंदना करते हैं, जिसने इस सृष्टि की रचना की है। ईश्वर की इस सृष्टि में धर्म, जाति, वर्ग, वर्ण के आधार पर बंटवारे की रेखाएं खींच कर हम वस्तुतः उस शक्ति को ही नकारते हैं। यही सब देखकर शायर ने कहा होगा, 'मज़हब बेनाम हो जाये तो सुकूं मिले...' ग़ज़ल में आगे कहा गया है—'हर खुदा में है, खुदा हर में है, यह बात अम्ल हो जाये तो, सुकूं मिलें'। यहां पहला हर हरि यानी ईश्वर है। खुदा और हरि के इस रिश्ते को समझना ज़रूरी है। इसे मान कर, इसके अनुरूप आचरण करना ज़रूरी है। हम तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को मानने वाले हैं, सर्वे भवन्तु सुखिनः के दर्शन की बात करते है। ईश्वर की रची इस सृष्टि में आदमी और आदमी के बीच अंतर पैदा करके हम रचयिता को ही अपमानित करते हैं। भगवान महावीर ने अनेकांतवाद का दर्शन दिया था।सबसे पहले तो हमें यह बात अपने नेताओं को समझानी होगी, जो अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए हमें धर्मों और जातियों में बांटने का घटिया खेल खेलते रहते हैं। बहुत खतरनाक है यह खेल, यह बात उन्हें नहीं, हमें समझने की ज़रूरत है। इस खेल में मोहरे भी हम हैं और शिकार भी। राजनीतिक स्वार्थों के चलते संविधान की प्रस्तावना में लिखे चार शब्द 'हम भारत के लोग' न जाने कहां खो जाते हैं। नागरिकों को इंसान नहीं, मात्र वोट बनाकर राजनीति करने वालों का खतरनाक खेल देखकर कवि नीरज की यह पंक्तियां दोहराने का मन करता है—'अब कोई मज़हब ऐसा भी चलाया जाये/ जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाये।'

अभियान

झूठे प्रेम का भ्रम और आत्मज्ञान की जागृति

एक नगर में एक सिद्ध महात्मा रहते थे, जिनका नाम समस्त दिशा में प्रसिद्ध था। एक दिन आत्मज्ञान की खोज में भटकता हुआ एक नवयुवक उनके आश्रम में आया और चरणों में प्रणाम कर बोला, "गुरुदेव! मैं सत्य और आत्मज्ञान की प्राप्ति चाहता हूँ, कृपया मुझे अपना शिष्य बना लें।" महात्मा ने शांत स्वर में कहा, "वत्स, आत्मज्ञान कोई शब्दों का ज्ञान नहीं, अनुभव का सत्य है। इसके लिए पहले तुम्हें अपने भीतर की अशुद्धियों को जीतना होगा। जब मैं समझूंगा कि तुम योग्य हो, तभी ज्ञान दूंगा।" युवक ने गुरु की आज्ञा स्वीकार कर ली और आश्रम में रहने लगा। वह प्रतिदिन प्रातः नदी से जल लाता, हवन के लिए लकड़ियाँ जुटाता और सेवा भाव से गुरु की हर आज्ञा का पालन करता। उसकी निष्ठा देखकर महात्मा संतुष्ट हुए और एक दिन बोले, "बेटा, जीवन का परम उद्देश्य आत्मकल्याण है। संसार का प्रत्येक बुद्धिमान मनुष्य इस दिशा में अवश्य चलना चाहिए।" युवक ने सिर झुकाकर कहा, "गुरुदेव, आपकी बात सत्य है, लेकिन मैं परिवार से बंधा हूँ। मेरे माता-पिता वृद्ध हैं और मेरी पत्नी मुझसे बहुत प्रेम करती है। यदि मैं उन्हें छोड़ दूँ तो उनका क्या होगा? वे मेरे बिना नहीं रह पाएंगे।" महात्मा मुस्कराए और बोले, "वत्स, मैं तुझसे संन्यास नहीं माँगता। केवल यह कहता हूँ कि कुछ समय अपने आत्मकल्याण में भी लगाओ। संसार से प्रेम करो, परंतु उसमें बंध मत जाओ।" युवक ने कहा, "गुरुदेव, यदि मैं एक दिन भी घर से गायब हो जाऊँ तो सब व्याकुल हो जाएंगे। मैंने यहां आने के लिए भी झूठ बोला कि व्यापार के सिलसिले में गया हूँ। अगर मैं वास्तव में घर छोड़ दूँ तो मेरी पत्नी तो शायद प्राण त्याग देगी।" महात्मा ने शांत भाव से कहा, "बेटा, कोई नहीं मरेगा। यह जो तू प्रेम समझता है, वह केवल मोह है। यदि तुझे सत्य पर विश्वास नहीं, तो इसकी परीक्षा कर।" युवक तैयार हो गया। महात्मा ने

उसे एक ऐसा प्राणायाम सिखाया जिससे श्वास सूक्ष्म हो जाए और शरीर मृत समान प्रतीत हो। उन्होंने कहा, "जा, अपने घर जा और कुछ समय के लिए यह अभ्यास कर। देख, तेरे तथाकथित प्रेमी लोग तेरे लिए क्या करते हैं।" युवक ने वैसा ही किया। वह घर पहुंचा और बीमार पड़ने का नाटक किया। फिर महात्मा द्वारा बताए अनुसार श्वास रोक ली। वैद्य बुलाए गए, जिन्होंने उसे मृत घोषित कर दिया। घर में शोक की लहर दौड़ गई। माता-पिता रोने लगे, पत्नी बेहोश हो गई, और पूरे गाँव में मातम फैल गया। कुछ समय बाद महात्मा वहाँ पहुँचे और बोले, "यह युवक विशिष्ट है। इसे जीवन दान मिल सकता है।" सब चकित हुए और उनके पैरों में गिर पड़े। महात्मा ने एक कटोरा दूध मँगवाया, उसमें मंत्र पढ़कर थोड़ी राख डाली और बोले, "जो कोई भी इस युवक से सच्चा प्रेम करता है, वह यह दूध पी ले। उसके मरते ही यह युवक जीवित हो जाएगा।" पूरा घर मौन हो गया। महात्मा ने पहले माता-पिता की ओर देखा, "तुम्हारा बेटा है, क्या तुम इसके लिए प्राण नहीं दोगे?" पिता बोले, "महाराज, हमारे मरने के बाद इसका जीना किस काम का? और कौन जाने यह उपाय सच भी हो या नहीं।" महात्मा पत्नी की ओर मुड़े, "बेटी, क्या तुम अपने पति के लिए जीवन दान नहीं दोगी?" पत्नी ने आँसू पोंछे और बोली, "महाराज, हर जीव का अपना भाग्य है। अगर मैं मर गई तो ये किसी और से विवाह कर लेंगे। स्त्री का जीवन तो पति के बिना अधूरा है, फिर मरने से क्या लाभ? मैं अपने मायके चली जाऊँगी और नई शुरुआत कर लूँगी।" महात्मा ने आस-पड़ोस और रिश्तेदारों की ओर देखा, पर सबने मुँह फेर लिया। अंत में महात्मा बोले, "ठीक है, अगर कोई नहीं पीता तो मैं ही यह दूध पी लेता हूँ।" भीड़ में हलचल मच गई — "महात्मा का जीवन तो दूसरों के लिए ही होता है, इनके बलिदान से युवक को नया जीवन मिलेगा।" महात्मा ने दूध पिया और युवक के कान में बोले, "अब उठो बेटा! देख लिया न, कौन वास्तव में तुझसे प्रेम करता है?" युवक उठ बैठा, उसकी आँखों से मोह का पर्दा हट चुका था। उसने घर की ओर देखा, लेकिन अब वहाँ कोई आकर्षण नहीं था। उसने सबको प्रणाम किया और गुरु के साथ आश्रम लौट गया। उस दिन से वह केवल एक ही सत्य में जीने लगा — आत्मज्ञान ही शाश्वत प्रेम है, बाकी सब माया का खेल। शिक्षाः यह कहानी बताती है कि संसार का प्रेम अक्सर स्वार्थ से बंधा होता है। जो प्रेम आत्मा के सत्य से जुड़ा है, वही अमर है। मोह में नहीं, कर्तव्य और आत्मोन्नति में ही वास्तविक सुख है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

अहमदाबाद में बुलेट ट्रेन स्टेशन निर्माण कार्य अंतिम चरण में 2029 तक पटरी पर दौड़ेगी भारत की पहली हाई-स्पीड रेल

नई दिल्ली। भारत की महत्वाकांक्षी हाई-स्पीड रेल परियोजना, जिसे आमतौर पर "बुलेट ट्रेन" कहा जाता है, अब अपने सबसे निर्णायक पड़ाव पर पहुंच चुकी है। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने अहमदाबाद रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास और मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल परियोजना की समीक्षा के बाद बताया कि अहमदाबाद में बुलेट ट्रेन स्टेशन का निर्माण कार्य अब अंतिम चरण में है। यह वही स्टेशन है जो देश की पहली बुलेट ट्रेन का प्रमुख ठिकाना बनने जा रहा है और जिसके जरिये भारत तेज़, आधुनिक और तकनीकी रूप से उन्नत रेल नेटवर्क के युग में कदम रखेगा।

रेल मंत्री ने जानकारी दी कि देशभर में इस समय 1,300 से अधिक रेलवे स्टेशन पुनर्विकास की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। इनमें अहमदाबाद स्टेशन सबसे महत्वपूर्ण परियोजनाओं में से एक है, जिसे आधुनिकता और ऐतिहासिक पहचान दोनों को संजोए हुए विकसित किया जा रहा है। पश्चिम रेलवे के अनुसार, अहमदाबाद के सारसपुर क्षेत्र में हाई-स्पीड रेल परियोजना का निर्माण तेजी से आगे बढ़ रहा है और अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल स्टेशन का ढांचा लगभग पूर्ण अवस्था में पहुंच गया है।

अश्विनी वैष्णव ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर जानकारी साझा करते हुए कहा, "अहमदाबाद स्टेशन का पुनर्विकास बेहद तेज़ी से हो रहा है। मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट हब (एमएमटीएच) की दो बेसमेंट और चार मंज़िलों वाला स्ट्रक्चरल फ्रेम लगभग पूरा हो गया है। एलिवेटेड रोड के लिए 41 में से 38 पियर तैयार हो चुके हैं और 253 में से 154 गर्डर लॉन्च किए जा चुके हैं। बुलेट ट्रेन अहमदाबाद स्टेशन का निर्माण कार्य अपने अंतिम चरण में है।" उन्होंने बताया कि अहमदाबाद स्टेशन को इस तरह से विकसित किया जा रहा है कि बुलेट ट्रेन और पारंपरिक रेलवे दोनों के लिए यह एकीकृत परिसर बन जाए। इस व्यवस्था से यात्रियों को बिना किसी असुविधा के एक ही स्थान से हाई-स्पीड और सामान्य रेल सेवाओं का उपयोग करने की सुविधा मिलेगी। इस पुनर्विकास के तहत स्टेशन में तीन नए प्लेटफॉर्म भी जोड़े जा रहे हैं, जिससे परिचालन क्षमता और यात्री संख्या दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

भारत की पहली बुलेट ट्रेन परियोजना 508 किलोमीटर लंबा मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर है। यह पूरी परियोजना जापान के सहयोग से तैयार की जा रही है और इसकी लागत लगभग 1.1 लाख करोड़ रुपये बताई जाती है। अनुमान है कि वर्ष 2029 तक यह परियोजना पूरी तरह संचालन के लिए तैयार हो जाएगी। हालांकि, गुजरात के सूरत और बिलिमोरा के बीच 50 किलोमीटर लंबे हिस्से को 2027 तक खोलने की योजना है, जिससे भारत में हाई-स्पीड ट्रेन का पहला परिचालन परीक्षण शुरू हो सके।

सितंबर में रेल मंत्री ने निर्माणाधीन सूरत स्टेशन का भी दौरा किया था, जहां उन्होंने ट्रैक बिछाने और पहला टर्नआउट लगाने की प्रक्रिया का निरीक्षण किया। उनके अनुसार, इस हाई-स्पीड रेल के शुरू होने के बाद मुंबई और अहमदाबाद के बीच की दूरी केवल दो घंटे सात मिनट में तय हो जाएगी, जबकि वर्तमान में यह दूरी सड़क मार्ग से लगभग नौ घंटे और रेल मार्ग से छह घंटे में तय होती है।

अश्विनी वैष्णव ने यह भी बताया कि इस परियोजना में अत्याधुनिक सुरक्षा तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। ट्रैक के साथ कंपन अवशोषण प्रणाली, तेज़ हवाओं और भूकंप जैसे प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए विशेष सुरक्षा उपाय किए गए हैं। इसके अलावा, स्टेशन और ट्रेन दोनों में अत्याधुनिक सिग्नलिंग और नियंत्रण तकनीक का उपयोग किया जाएगा, जिससे न केवल यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित होगी बल्कि संचालन में भी अधिक दक्षता आएगी।

यह परियोजना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "नए भारत" विजन का एक बड़ा प्रतीक मानी जा रही है। बुलेट ट्रेन के संचालन से भारत एशिया के उन देशों की श्रेणी में शामिल हो जाएगा, जिनके पास विश्वस्तरीय हाई-स्पीड रेल नेटवर्क है। यह परियोजना न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि रोजगार, पर्यटन और क्षेत्रीय विकास के लिहाज से भी अहम मानी जा रही है।

रेल मंत्री ने यह भी संकेत दिया कि आने वाले वर्षों में देश के अन्य हिस्सों में चार और बुलेट ट्रेन कॉरिडोर स्थापित करने की योजना है। इन कॉरिडोरों का उद्देश्य भारत को एकीकृत हाई-स्पीड रेल नेटवर्क से जोड़ना है, जिससे दिल्ली, वाराणसी, चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद और कोलकाता जैसे महानगरों को भी आधुनिक परिवहन प्रणाली से लाभ मिल सके।

अहमदाबाद स्टेशन के पुनर्विकास और बुलेट ट्रेन परियोजना का समापन भारत की रेलवे यात्रा का एक ऐतिहासिक अध्याय होगा। यह सिर्फ एक तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि देश की प्रगति, नवाचार और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनेगा — जहां विकास की पटरी पर भारत अब "स्पीड" से नहीं, बल्कि "सुपरस्पीड" से दौड़ेगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल मोरबी में दादा भगवान के 118वें जयंती महोत्सव में सहभागी हुए

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने महोत्सव के दूसरे दिन सीमंधर स्वामी और दादा भगवान की आरती उतारी और सभी के कल्याण की कामना की

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल मंगलवार को मोरबी में आयोजित पूज्य दादा भगवान के 118वें जयंती महोत्सव में सहभागी हुए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सत्संग-प्रार्थना में उपस्थित रहकर आत्मज्ञानी श्री दीपकभाई द्वारा दिए गए आत्मज्ञान के प्रवचन का श्रवण किया।

मुख्यमंत्री और श्री दीपकभाई ने इस अवसर पर सीमंधर स्वामी और दादा भगवान की पूजा-अर्चना की और आरती उतारकर सभी के कल्याण की कामना की।

उल्लेखनीय है कि मोरबी में आगामी 09 नवंबर तक दादा भगवान के 118वें जयंती महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया है। इस महोत्सव का शुभारंभ 03 नवंबर को हुआ था। इस आयोजन के दूसरे दिन, मंगलवार को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की गरिमामयी उपस्थिति में सत्संग का आयोजन किया गया।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर पूजा, आरती और दर्शन का लाभ लिया और समग्र जगत के जीवमात्र के कल्याण की कामना की। उन्होंने प्रार्थना की कि प्रत्येक को सच्चे सुख की प्राप्ति हो।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने आत्मज्ञानी श्री दीपकभाई को माला पहनाकर उनका आशीर्वाद लिया। श्री दीपकभाई ने मुख्यमंत्री को दादा भगवान के जीवन पर आधारित पुस्तक 'ज्ञानी पुरुष, भाग-6' भेंट की। आत्मज्ञानी श्री दीपकभाई ने इस सत्संग में बिना आत्मा का शरीर, कर्म, कर्ता का भाव, दुनिया के दुखों से मुक्ति, शुद्ध आत्मा, मानव और आधुनिक टेक्नोलॉजी से लैस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तथा प्रत्येक क्षण में जागृति की भावना के विकसित होने जैसी ज्ञान की प्रेरक बातें कहीं।

इस अवसर पर श्रम, रोजगार और कौशल विकास राज्य मंत्री श्री कांतिभाई अमृतिया, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती हंसाबेन पारेघी, राज्य सभा सांसद श्री केसरीदेव सिंह झाला, विधायक श्री दुर्लभजीभाई देथरिया, मेघजीभाई चावड़ा, पूर्व मंत्री श्री ब्रिजेशभाई मेरजा, पूर्व सांसद श्री मोहनभाई कुंडारिया, जिला कलेक्टर श्री के.बी. झवेरी, मोरबी महानगर पालिका आयुक्त श्री स्वप्निल खरे, जिला पुलिस अधीक्षक श्री मुकेश पटेल, अग्रणी श्री जयंतीभाई राजकोटिया, श्री दादा भगवान के अनुयायी और मोरबीवासी विशाल संख्या में उपस्थित रहे।

आइकॉनिक 'अटल ब्रिज' : गत तीन वर्षों में 77.71 लाख से अधिक लोगों ने की सैर, 27 करोड़ रुपए से अधिक की हुई आय

▸▸ अप्रैल 2025 से अक्टूबर 2025 के दौरान, केवल 7 महीने में ही 8.50 लाख से अधिक आगंतुक अटल ब्रिज को देखने पहुंचे

▸▸ अहमदाबाद के लोगों सहित देश और दुनिया के सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र बना अटल फुट ओवर ब्रिज

गांधीनगर : भारत की पहली हेरिटेज सिटी अहमदाबाद में साबरमती नदी पर बना आइकॉनिक 'अटल ब्रिज' आज अहमदाबाद के लोगों सहित देश और दुनिया के सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया है। छुट्टियां चाहे दिवाली की हो या गर्मियों की, अटल फुटओवर ब्रिज लोगों की सैर का एक पसंदीदा गंतव्य बन गया है। बता दें कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 27 अगस्त, 2022 को अटल ब्रिज आम जनता के लिए खोला था। साबरमती रिवरफ्रंट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एसआरएफडीसीएल) के ताजा आंकड़ों के मुताबिक 31 अगस्त, 2022 से अक्टूबर 2025 तक कुल 77,71,269 लोग अटल ब्रिज को देखने के लिए पहुंचे। इससे अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी) को 27.70 करोड़ रुपए से अधिक की आय हुई है, जो अहमदाबाद के टूरिज्म क्षेत्र के लिए गौरव की बात है।

उल्लेखनीय है कि अहमदाबाद गुजरात का सबसे बड़ा और आधुनिक शहर है, जिसने आधुनिकीकरण के साथ-साथ अपनी गौरवशाली विरासत को भी संजोकर रखा है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में अहमदाबाद शहर में आने वाले पर्यटकों को एक अभूतपूर्व अनुभव प्रदान करने के लिए विभिन्न पर्यटन आकर्षण विकसित किए गए हैं। गांधी आश्रम, साबरमती रिवरफ्रंट, कांकरिया लेकफ्रंट, दुनिया का सबसे बड़ा नरेन्द्र मोदी स्टेडियम, अहमदाबाद की पुरानी पोळ संस्कृति और अहमदाबाद हेरिटेज वॉक आदि पर्यटन आकर्षणों को देखने के लिए लाखों पर्यटक अहमदाबाद की यात्रा करते हैं। इनमें, विशेष रूप से अटल फुट ओवर ब्रिज आधुनिक स्थापत्य, गुजराती संस्कृति और नगरीय सौंदर्य का जीवंत प्रतीक है।

अटल ब्रिज आने वाले आगंतुकों के वर्षवार आंकड़े

अटल ब्रिज का निर्माण साबरमती रिवरफ्रंट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एसआरएफडीसीएल) द्वारा किया गया है, जो अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी) के पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी है। एसआरएफडीसीएल द्वारा दिए गए वर्षवार आंकड़ों की बात करें, तो 31 अगस्त, 2022 से मार्च 2023 के दौरान 21.62 लाख पर्यटक अटल ब्रिज देखने के लिए पहुंचे थे, इससे 6.44 करोड़ रुपए की आय हुई। अप्रैल 2023 से मार्च 2024 के दौरान 26.89 लाख आगंतुकों से 8.24 करोड़ रुपए की आय तथा अप्रैल 2024 से मार्च 2025 के दौरान 20.67 लाख आगंतुकों से 8.19 करोड़ रुपए की आय हुई। वहीं, अप्रैल 2025 से अक्टूबर 2025 तक 8.51 लाख आगंतुक अटल ब्रिज घूमने आ चुके हैं, जिससे अहमदाबाद महानगर पालिका को 4.82 करोड़ रुपए की आय अर्जित हुई है।

इस आइकॉनिक अटल ब्रिज को लगभग 74 करोड़ रुपए की लागत से तैयार किया गया है। अब तक, अहमदाबाद महानगर पालिका को अटल ब्रिज से 27.70 करोड़ रुपए की आय हो चुकी है। इस प्रकार, अहमदाबाद महानगर पालिका ने अटल ब्रिज के निर्माण पर हुए कुल खर्च का 37 फीसदी से अधिक हिस्सा रिकवर कर लिया है।

सोना वायदा में 449 रुपये, चांदी वायदा में 1635 रुपये और क्रूड ऑयल वायदा में 99 रुपये की नरमी

कमोडिटी वायदाओं में 26661.36 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 83808.28 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवरः सोना-चांदी के वायदाओं में 21246.07 करोड़ रुपये का हुआ कारोबारः बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 28404 पॉइंट के स्तर पर

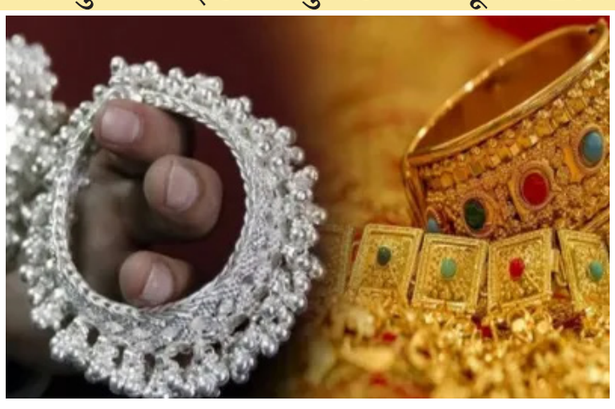

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में 110471.37 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 26661.36 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 83808.28 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का नवंबर वायदा 28404 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1600.02 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 21246.07 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना दिसंबर वायदा 120802 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 121135 रुपये और नीचे में 119801 रुपये पर पहुंचकर, 121409 रुपये के पिछले बंद के सामने 449 रुपये या 0.37 फीसदी गिरकर 120960 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी नवंबर वायदा 391 रुपये या 0.4 फीसदी गिरकर 97804 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल नवंबर वायदा 46 रुपये या 0.37 फीसदी गिरकर 12236 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 119613 रुपये के भाव पर खूलकर, 120070 रुपये के दिन के उच्च और 119182 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 145 रुपये या 0.12 फीसदी गिरकर 119985 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन नवंबर वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 121113 रुपये के भाव पर खूलकर, 121440 रुपये के दिन के उच्च और 120478 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 121646 रुपये के पिछले बंद के सामने 476 रुपये या 0.39 फीसदी गिरकर 121170 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी दिसंबर वायदा 146466 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 147230 रुपये और नीचे में 145262 रुपये पर पहुंचकर, 147758 रुपये के पिछले बंद के सामने 1635 रुपये या 1.11 फीसदी गिरकर 146123 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी नवंबर वायदा 1847 रुपये या 1.23 फीसदी औंधकर 148303 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि चांदी-माइक्रो नवंबर वायदा 1834 रुपये या 1.22 फीसदी औंधकर 148293 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

मेटल वर्ग में 2580.10 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा नवंबर वायदा 12.1 रुपये या 1.2 फीसदी गिरकर 997.1 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता नवंबर वायदा 95 पैसे या 0.31 फीसदी घटकर 303.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम नवंबर वायदा 1.75 रुपये या 0.64 फीसदी औंधकर 272.3 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा नवंबर वायदा 45 पैसे या 0.25 फीसदी टूटकर 182.9 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 2869.29 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 5398 रुपये के भाव पर खूलकर, 5412 रुपये के दिन के उच्च और 5331 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 99 रुपये या 1.82 फीसदी गिरकर 5348 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी नवंबर वायदा 96 रुपये या 1.76 फीसदी गिरकर 5352 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस नवंबर वायदा 376.6 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 377.9 रुपये और नीचे में 371.9 रुपये पर पहुंचकर, 378.4 रुपये के पिछले बंद के सामने 4.8 रुपये या 1.27 फीसदी गिरकर 373.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी नवंबर वायदा 4.6 रुपये या 1.22 फीसदी घटकर 373.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 938.9 रुपये के भाव पर खूलकर, 1.3 रुपये या 0.14 फीसदी की बढ़त के साथ 934 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 13197.41 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 8048.66 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2001.67 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 169.48 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 22.66 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 385.73 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 631.95 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2228.57 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 1.88 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 0.39 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 16545 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 54097 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 20862 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 314146 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 29888 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 28616 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 54274 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 151580 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17585 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 26683 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 28429 पॉइंट पर खूलकर, 28429 के उच्च और 28202 के नीचले स्तर को छूकर, 164 पॉइंट घटकर 28404 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल नवंबर 5400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 46.9 रुपये की गिरावट के साथ 115.5 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस नवंबर 380 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.4 रुपये की गिरावट के साथ 18.25 रुपये हुआ।

सोना नवंबर 130000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 98.5 रुपये की गिरावट के साथ 482 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी नवंबर 160000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 538 रुपये की गिरावट के साथ 1245 रुपये हुआ। तांबा नवंबर 1000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 9.12 रुपये की गिरावट के साथ 16.19 रुपये हुआ। जस्ता नवंबर 305 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 32 पैसे की नरमी के साथ 4.65 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल नवंबर 5300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 37.8 रुपये की बढ़त के साथ 115.9 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस नवंबर 370 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1.9 रुपये की बढ़त के साथ 19.05 रुपये हुआ।

सोना नवंबर 115000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 69.5 रुपये की बढ़त के साथ 750 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी नवंबर 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 241.5 रुपये की बढ़त के साथ 2334 रुपये हुआ। तांबा नवंबर 1000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 3.11 रुपये की बढ़त के साथ 19 रुपये हुआ। जस्ता नवंबर 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1.3 रुपये की गिरावट के साथ 3.7 रुपये हुआ।

महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे श्री विवेक कुमार गुप्ता ने अहमदाबाद मंडल में रेल परियोजनाओं एवं विकास कार्यों की समीक्षा बैठक की

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, अहमदाबाद में अहमदाबाद मंडल पर चल रही विभिन्न रेल परियोजनाओं, निर्माण एवं पुनर्विकास कार्यों की प्रगति की विस्तृत समीक्षा बैठक की।

महाप्रबंधक ने इस दौरान अहमदाबाद, साबरमती और भुज स्टेशन पर चल रहे रि-डवलपमेंट कार्य की प्रगति, आदरज मोटी-विजापुर गेज परिवर्तन, साबरमती-असारवा Y कनेक्टिविटी, गांधीधाम-आदिपुर लाइन का चौहरिकरण, सामाख्याली–गांधीधाम चौहरिकरण, अहमदाबाद यार्ड रिमॉडलिंग वटवा-अहमदाबाद-साबरमती चौथी लाइन, नलिया-जखाऊ पोर्ट नई लाइन आदि परियोजना के कार्य की प्रगति की समीक्षा की।

बैठक में महाप्रबंधक श्री गुप्ता ने अहमदाबाद मंडल में चल रहे स्टेशन पुनर्विकास कार्यों, रोड ओवर ब्रिज (ROB), रोड अंडर ब्रिज (RUB), यात्री सुविधाओं के उन्नयन, सुरक्षा एवं परिचालन सुधार कार्यों की बिंदुवार समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों से प्रत्येक प्रोजेक्ट की वर्तमान स्थिति, पूर्णता का लक्ष्य, आने वाली तकनीकी या प्रशासनिक अड़चनों तथा समाधान की दिशा में उठाए जा रहे कदमों की जानकारी ली। यह भी निर्देश दिए कि सभी निर्माण कार्यों को निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण किया जाए, ताकि यात्रियों को बेहतर सुविधाएँ मिल सकें और परिचालन दक्षता में वृद्धि हो। उन्होंने यह भी कहा कि परियोजनाओं की मॉनिटरिंग नियमित रूप से की जाए तथा कार्यस्थल पर सुरक्षा मानकों का पालन सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ सुनिश्चित किया जाए।

बैठक के दौरान श्री गुप्ता ने अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत गेज कन्वर्जन एवं नई रेल लाइन निर्माण परियोजनाओं की प्रगति पर भी विशेष ध्यान दिया। उन्होंने विस्तृत रूप से यह जाना कि किस सेक्शन में कितना कार्य पूरा हो चुका है, कितना कार्य शेष है और निर्धारित समय तक उसे पूरा करने की योजना क्या है।

पश्चिम रेलवे निरंतर यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा और संरचनात्मक विकास के क्षेत्र में नए मानक स्थापित कर रही है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सभी अधिकारी मिलजुलकर निर्धारित लक्ष्यों को समय पर पूरा करेंगे।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण), मुख्य परियोजना प्रबंधक (निर्माण), मुख्य परियोजना प्रबंधक (RLDA) सहित मंडल के वरिष्ठ अधिकारी एवं मुख्यालय से आए प्रधान मुख्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

भरूच यार्ड में फुट ओवर ब्रिज डी-लॉन्चिंग हेतु ब्लॉक, कुछ ट्रेनें रेगुलेट की जाएंगी

वडोदरा-सूरत स्टेशनों के बीच भरूच यार्ड में फुट ओवर ब्रिज (FOB) की डी-लॉन्चिंग हेतु बुधवार, 5 नवंबर, 2025 को 12:50 बजे से 15:50 बजे तक 3 घंटे का ब्लॉक लिया जाएगा। यह ब्लॉक अप एवं डाउन मेन लाइनों पर लिया जाएगा, जिसके कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक के कारण प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः

05 नवंबर, 2025 को रेगुलेट की जाने वाली ट्रेनेंः

1. ट्रेन संख्या 12656 पुरट्च तलैवर डॉ. एम. जी. आर. चेन्नई सेंट्रल-अहमदाबाद एक्सप्रेस 01 घंटा 25 मिनट रेगुलेट होगी।
2. ट्रेन संख्या 09003 मुंबई सेंट्रल-शकूर बस्ती स्पेशल 01 घंटा 30 मिनट रेगुलेट होगी।
3. ट्रेन संख्या 09075 मुंबई सेंट्रल-काठगोदाम स्पेशल 55 मिनट रेगुलेट होगी।
4. ट्रेन संख्या 09095 बांद्रा टर्मिनस-अयोध्या कैंट स्पेशल 45 मिनट रेगुलेट होगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बेमौसम बारिश से प्रभावित क्षेत्रों के दौरे के बाद गांधीनगर में उच्च स्तरीय बैठक कर स्थिति की समीक्षा की

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बेमौसम बारिश से प्रभावित जिलों का सोमवार को दौरा किया। उन्होंने प्रभावित गाँवों के किसानों से स्थिति की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने सूरत तथा कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने भावनगर का दौरा कर किसानों की फसलों को हुए नुकसान का विवरण प्राप्त किया।

इन प्रत्यक्ष दौरों के बाद मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मंगलवार को गांधीनगर में उच्च स्तरीय बैठक आयोजित समग्र स्थिति की समीक्षा की।

इस बैठक में कृषि राज्य मंत्री श्री रमेशभाई कटारा, मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, राजस्व विभाग की अपर मुख्य सचिव डॉ. जयंती रवि, कृषि विभाग की अपर मुख्य सचिव डॉ. अंजू शर्मा, वित्त विभाग के प्रधान सचिव डॉ. टी. नटराजन, मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव डॉ. विक्रांत पांडे तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी सहभागी हुए।

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर पेंशन अदालत का आयोजन किया जाएगा

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार सेवा निवृत्त कर्मचारियों के पेंशन संबन्धित प्रश्नों के त्वरित निपटारे के लिए 15 दिसंबर, 2025 (सोमवार) को पेंशन अदालत का आयोजन किया गया है।

अहमदाबाद मण्डल से जो भी कर्मचारी सेवानिवृत हुए है उन पेंशनर/फेमिली पेंशनर के पेंशन संबंधित शिकायतों के निवारण हेतु मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय अहमदाबाद में दिनांक 15.12.2025 (सोमवार) को पेंशन अदालत का आयोजन किया जा रहा है।

अहमदाबाद मंडल से जो भी कर्मचारी रेल सेवा से सेवानिवृत्त हुए हैं वह पेंशनर/फैमिली पेंशनर अपनी पेंशन संबंधित शिकायतें है वह अपना आवेदन (तीन प्रतियों में) दिनांक 21.11.2025 तक मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय (स्थापना), अहमदाबाद मण्डल पश्चिम रेलवे, GCS हॉस्पिटल के सामने अमदुपुरा अहमदाबाद पिनकोडः382345 को भेज सकते हैं। आवेदन में अपना नाम, पदनाम, अंतिम वेतन, भर्ती तिथि, सेवानिवृत्ति की तिथि PPO प्रति एवं शिकायत का प्रकार अवश्य दर्ज करें।

सिर्फ ढाई रुपये मुआवजा! 11 एकड़ की फसल बर्बाद, किसान को मिली दो रुपये तीस पैसे की राहत — महाराष्ट्र सरकार ने दी सफाई, विपक्ष का हमला तेज़

पालघर/मुंबई। महाराष्ट्र में बेमौसम बारिश से तबाह हुए किसानों की व्यथा के बीच एक ऐसा मामला सामने आया है जिसने पूरे राज्य में हैरानी और आक्रोश दोनों फैला दिए हैं। पालघर ज़िले के वाडा तालुका के शिलोत्तर गांव में एक किसान को सरकार और बीमा कंपनी की ओर से मुआवज़े के रूप में मात्र 2.30 रुपये मिले हैं। 11 एकड़ ज़मीन पर पूरी फसल बर्बाद हो जाने के बावजूद यह राशि मिलने पर ग्रामीणों में नाराज़गी फैल गई है और यह घटना किसानों की दुर्दशा की प्रतीक बन गई है।

शिलोत्तर गांव के किसान मधुकर बाबूराव पाटील का कहना है कि लगातार बेमौसम बारिश के कारण उनकी धान की पूरी फसल सड़ गई, खेतों में पानी भर गया और जो चारा उन्होंने पशुओं के लिए रखा था वह भी खराब हो गया। उन्होंने बताया कि खेत में खड़ी फसल पूरी तरह मिट्टी में मिल गई, लेकिन सरकार और बीमा कंपनी ने जो सहायता दी, वह केवल 2.30 रुपये है — जो उनके अनुसार “अपमानजनक और मज़ाक” के समान है।

मधुकर पाटील ने बताया कि उन्होंने फसल बीमा योजना के तहत सभी आवश्यक दस्तावेज जमा किए थे और स्थानीय अधिकारियों को नुकसान का पूरा ब्यौरा भी दिया था, लेकिन जब खाते में मुआवज़े की राशि आई, तो वे देखकर दंग रह गए। “ढाई रुपये में अब मैं क्या करूं? बीज भी नहीं खरीद सकता। सरकार ने हमें मज़ाक बना दिया है,” उन्होंने कहा।

इस घटना का वीडियो और बैंक ट्रांजैक्शन स्लिप सोशल मीडिया पर वायरल हो गई, जिसके बाद यह मामला पूरे महाराष्ट्र में चर्चा का विषय बन गया। लोगों ने बीमा योजना और सरकारी राहत तंत्र की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए हैं।

प्रशासन ने दी सफाई, बताया तकनीकी गड़बड़ी का मामला

जिला कृषि अधिकारी नीलेश भागेश्वर ने इस मामले की जांच के बाद स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि यह केवल एक तकनीकी त्रुटि थी। उन्होंने बताया कि किसान को खरीफ 2023 की धान की फसल के नुकसान पर कुल 72,466 रुपये का मुआवज़ा स्वीकृत हुआ था, जिसमें से 72,464 रुपये मई 2024 में ही उनके खाते में ट्रांसफर हो चुके थे। शेष 2.30 रुपये की राशि तकनीकी कारणों से 31 अक्टूबर 2025 को ट्रांसफर हुई, जिसके चलते यह अजीब स्थिति उत्पन्न हुई।

अधिकारी ने कहा कि किसान को

पूरी राशि पहले ही मिल चुकी है और अब शेष दो रुपये तीस पैसे केवल सिस्टम की देरी का हिस्सा हैं। “यह किसी भी तरह से प्रशासन की मंशा नहीं थी, बल्कि तकनीकी गड़बड़ी का नतीजा है,” भागेश्वर ने कहा।

राजनीतिक गलियारों में मचा बवाल, विपक्ष ने बोला हमला

जैसे ही यह मामला सुर्खियों में आया, महाराष्ट्र की राजनीति में इसे लेकर बवाल मच गया। शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने मुंबई में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि “यह किसानों के साथ सरकारी मज़ाक है।” ठाकरे ने इसे “नीति विफलता और प्रशासनिक असंवेदनशीलता” करार दिया और राज्य सरकार से तुरंत कर्ज़ माफी और प्रति हेक्टेयर 50,000 की सहायता राशि की घोषणा करने की मांग की।

उन्होंने कहा, “यह घटना बताती है कि बीमा कंपनियां और सरकारी अधिकारी किसानों की तकलीफ नहीं समझते। सिस्टम की लापरवाही से किसान आत्महत्या करने को मजबूर होते हैं, और जब फसल पूरी तरह बर्बाद हो जाए तो उन्हें सिर्फ दो रुपये का मुआवज़ा दिया जाता है — यह अपमान है।”

कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार गुट) ने भी इस घटना को लेकर सरकार को आड़े हाथों लिया है। कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा कि राज्य की बीमा योजनाएँ किसानों की सुरक्षा नहीं बल्कि उनका शोषण कर रही हैं।

किसानों के दर्द की कहानी फिर उजागर हुई

पालघर का यह मामला अकेला नहीं है। पिछले कुछ महीनों में महाराष्ट्र के कई जिलों में किसानों ने शिकायत की है कि बीमा दावों के निपटान में देरी हो रही है, और जिन किसानों की फसल पूरी तरह नष्ट हो चुकी है, उन्हें या तो बहुत कम राशि मिल रही है या महीनों तक इंतज़ार करना पड़ता है।

इस घटना ने एक बार फिर सवाल खड़ा किया है कि क्या भारत में किसानों के लिए बनाई गई फसल बीमा योजनाएँ वास्तव में ज़मीन पर असरदार हैं? क्या इन योजनाओं की निगरानी और पारदर्शिता बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है?

फिलहाल, प्रशासन ने कहा है कि वे पूरे मामले की आंतरिक जांच करेंगे ताकि भविष्य में ऐसी तकनीकी गड़बड़ियाँ दोबारा न हों। लेकिन शिलोत्तर गांव के मधुकर पाटील के लिए यह घटना हमेशा एक कड़वी याद बनकर रह जाएगी — जहां उनकी मेहनत की 11 एकड़ फसल बर्बाद हुई, और बदले में सरकार ने दिया ढाई रुपये का सांत्वना संदेश।

ब्रिटिश नागरिकता लेने के बाद भी सरकारी वेतन लेता रहा मौलाना, एटीएस की जांच में बड़ा खुलासा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के संतकबीरनगर जिले में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां ब्रिटिश नागरिकता लेने के बावजूद एक मौलाना ने वर्षों तक भारतीय सरकार से वेतन और पेंशन प्राप्त की। आरोपी मौलाना शमशुल हुदा खान के खिलाफ अब सरकारी धन के गबन का मामला दर्ज किया गया है। इस पूरे मामले की जांच एंटी टेररिस्ट स्क्वाड (एटीएस) कर रही है। आरोप है कि मौलाना विदेश में रहते हुए न केवल भारत से वेतन लेता रहा, बल्कि पाकिस्तान के नागरिकों और विदेशी संगठनों से भी संपर्क बनाए रखे हुए था।

अपर पुलिस महानिदेशक (कानून एवं व्यवस्था) अमिताभ यश ने बताया कि संतकबीरनगर के जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी की रिपोर्ट के आधार पर 2 नवम्बर को खलीलाबाद कोतवाली में शमशुल हुदा खान के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। जिस मदरसे में वह अध्यापक के पद पर कार्यरत था, उसे भी एहतियातन सील कर दिया गया है।

पुलिस जांच में सामने आया कि शमशुल हुदा खान की नियुक्ति 12 जुलाई 1984 को मदरसा दारूल उलूम अहले सुन्नत अशरफिया, मुबारकपुर (आजमगढ़) में सहायक अध्यापक के रूप में हुई थी। वर्ष 2007 में वह ब्रिटेन चला गया और वहीं स्थायी रूप से बस गया। 19 दिसम्बर 2013 को उसने ब्रिटिश नागरिकता ग्रहण की, लेकिन इसके बावजूद उसने 2007 से लेकर 2017 तक भारत में मदरसे से वेतन और वार्षिक वेतन वृद्धि प्राप्त की।

यही नहीं, 1 अगस्त 2017 को उसने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (VRS) भी ली और पेंशन स्वीकृत करा ली।

एटीएस की जांच में यह भी खुलासा हुआ कि मौलाना शमशुल हुदा खान विदेशों से धार्मिक फंड एकत्र करता था और कमीशन लेकर उन रकमों को विभिन्न मदरसों तक पहुंचाने का काम करता था। उसके पाकिस्तान और अन्य देशों के धार्मिक संगठनों से भी संपर्क में रहने की जानकारी मिली है। जांच में यह भी पाया गया कि उसने विदेश में रहते हुए भारत में भारी संपत्ति अर्जित की, जो उसकी पत्नी, बेटे और बहू के नाम पर दर्ज है।

सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार, मौलाना खान का संबंध दावत-ए-इस्लामी नामक संगठन से भी रहा है, जो कई बार खुफिया एजेंसियों की निगरानी में आ चुका है। बताया जा रहा है कि मौलाना के खिलाफ संतकबीरनगर और आजमगढ़ में पहले से ही दो मामले दर्ज हैं, जिनमें पुलिस ने आरोपपत्र दाखिल कर दिया है।

एटीएस सूत्रों के अनुसार, मामले की गहन जांच जारी है और विदेशी फंडिंग के रूट का पता लगाया जा रहा है। एजेंसियां यह भी खंगाल रही हैं कि क्या इस फंडिंग नेटवर्क के जरिए अन्य मदरसों में भी धन का दुरुपयोग किया गया।

यह मामला राज्य में शिक्षा और अल्पसंख्यक कल्याण विभागों के निगरानी तंत्र पर भी गंभीर सवाल खड़ा करता है, क्योंकि एक विदेशी नागरिक इतने वर्षों तक भारत सरकार से वेतन और पेंशन लेता रहा और विभाग को भनक तक नहीं लगी।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025: पहले चरण का प्रचार थमा, अब 6 नवंबर को 121 सीटों पर होगी वोटिंग

पटना। बिहार में सियासी तापमान अपने चरम पर पहुंचने के बाद मंगलवार शाम पांच बजे पहले चरण के मतदान के लिए चुनाव प्रचार थम गया। अब 6 नवंबर को राज्य की 121 विधानसभा सीटों पर मतदाता अपने प्रतिनिधियों का फैसला करेंगे। चुनाव आयोग ने सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं और राज्य के 38 जिलों में व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

पहले चरण में मुकाबला मुख्य रूप से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) और महागठबंधन के बीच है। राजग की ओर से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), जनता दल (यू), लोक जनशक्ति पार्टी–रामविलास (लोजपा–आर), हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) और राष्ट्रीय लोक मोर्चा (रोलोमो) मैदान में हैं। वहीं, महागठबंधन में राष्ट्रीय जनता दल (राजद), कांग्रेस, विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा), भाकपा–माले और माकपा एकजुट होकर चुनाव लड़ रहे हैं।

निर्वाचन आयोग के अनुसार, पहले चरण की 121 सीटों पर कुल 1,314 उम्मीदवार मैदान में हैं। इनमें कई नए चेहरे भी हैं, जो पहली बार अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। आयोग ने मतदान के दौरान किसी भी गड़बड़ी से निपटने के लिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। संवेदनशील और अतिसंवेदनशील केंद्रों पर अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की गई है, जबकि कई बूथों पर ड्रोन और वेबकास्टिंग के जरिए निगरानी रखी जाएगी।

मतदान वाले जिलों में मधेपुरा, सहरसा, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, गोपालगंज, सीवान, छपरा, वैशाली, समस्तीपुर, बेगूसराय, मुंगेर, लखीसराय, नालंदा, पटना, भोजपुर और बक्सर जैसे प्रमुख जिले शामिल हैं। इन इलाकों में मतदाताओं की संख्या करोड़ों में है और हर दल ने मतदाताओं को रिझाने के लिए पूरी ताकत झोंक दी थी।

इस चरण की कई सीटों पर हाई-प्रोफाइल मुकाबले देखने को मिलेंगे। तारापुर सीट पर उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी (भाजपा) और राजद के अरुण कुमार के बीच कड़ा संघर्ष है। राघोपुर सीट, जो लंबे समय से लालू परिवार का गढ़ रही है, पर तेजस्वी यादव और भाजपा प्रत्याशी सतीश कुमार यादव आमने-सामने हैं। महुआ सीट से लालू यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव चुनाव मैदान में हैं, जहां उनका मुकाबला जनशक्ति जनता दल के मुकेश कुमार रौशन से है।

अलीनगर में भाजपा की युवा प्रत्याशी मैथिली ठाकुर पर सबकी निगाहें हैं, जबकि छपरा सीट पर अभिनेता खेसारी लाल यादव की एंट्री ने मुकाबले को रोचक बना दिया है। उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा लखीसराय से मैदान में हैं, वहीं जदयू प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा, मंत्री विजय चौधरी, जीवेश कुमार, संजय सरावगी और मदन सहनी जैसे दिग्गजों का राजनीतिक भविष्य भी इसी चरण के मतदान से तय होगा।

पहले चरण की वोटिंग से बिहार की सत्ता के समीकरणों का पहला संकेत मिलने की उम्मीद है। राजग विकास और स्थिरता का वादा कर मैदान में है, जबकि महागठबंधन बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार के मुद्दे पर सरकार को घेर रहा है। अब सबकी निगाहें 6 नवंबर पर टिकी हैं, जब जनता ईवीएम के बटन से तय करेगी कि अगली सरकार किसके हाथों में होगी।

अस्पताल की लापरवाही ने खोली निजता की दीवारें पोर्न मार्केट तक पहुंच गए मैटरनिटी वार्ड के वीडियो

नई दिल्ली। गुजरात के राजकोट से एक ऐसा मामला सामने आया है जिसने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। पायल मैटरनिटी अस्पताल के सीसीटीवी कैमरों से रिकॉर्ड हुए निजी वीडियो अंतरराष्ट्रीय पोर्न मार्केट तक पहुंच गए। यह शर्मनाक घटना केवल एक तकनीकी नहीं, बल्कि मानवीय लापरवाही का नतीजा है — जहां अस्पताल प्रशासन ने अपने सीसीटीवी सिस्टम के लिए इतना कमजोर पासवर्ड रखा कि कोई भी हैकर आसानी से सिस्टम में घुस सकता था।

जानकारी के अनुसार, हैकर्स ने अस्पताल के नेटवर्क को पूरी तरह अपने कब्जे में ले लिया और करीब एक साल तक उस पर निगरानी रखी। जनवरी 2024 से दिसंबर 2024 के बीच उन्होंने अस्पताल के स्त्री रोग वार्ड में जांच के लिए आने वाली महिलाओं के अंतरंग पलों के हजारों घंटे के वीडियो चुरा लिए। इन फुटेज को बाद में उन्होंने एक अंतरराष्ट्रीय फेटिश नेटवर्क पर अपलोड किया, जहां इन्हें 700 से 4000 रुपये की कीमत में बेचा गया।

यह मामला तब उजागर हुआ जब “मेघा एमबीबीएस” और “सीपी मोंडा” नाम के दो यूट्यूब चैनलों पर अस्पताल के टीजर क्लिप प्रसारित किए गए। वहां से लोगों को एक टेलीग्राम ग्रुप से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया, जहां इन वीडियो का कारोबार चल रहा था। जांच एजेंसियों का कहना है कि इस नेटवर्क के माध्यम से देशभर से नौ महीनों में लगभग 50 हजार वीडियो चोरी कर बेचे गए।

फरवरी 2025 में इस साइबर गैंग के कुछ सदस्यों को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में उन्होंने कबूल किया कि उन्होंने केवल राजकोट ही नहीं, बल्कि पुणे, मुंबई, नासिक, सूरत, अहमदाबाद और दिल्ली समेत करीब 20 राज्यों के अस्पतालों, स्कूलों, कॉर्पोरेट दफ्तरों, सिनेमा हॉल, फैक्ट्रियों और यहां तक कि निजी आवासों के सीसीटीवी सिस्टम को भी हैक किया था। विशेष जांच दल (SIT) की रिपोर्ट में सामने आया कि अधिकांश संस्थानों के सीसीटीवी सिस्टम में “admin123” या “password” जैसे फैक्टरी डिफॉल्ट पासवर्ड इस्तेमाल किए जा रहे थे। यही सबसे बड़ा कारण बना कि देशभर के संस्थान हैकर्स की गिरफ्त में आ गए।

इस घटना ने साइबर सुरक्षा और निजता की सीमाओं को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। डिजिटल सुरक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि भारत में अब भी अधिकतर संस्थान बुनियादी साइबर हाइजीन का पालन नहीं करते। अस्पतालों और सरकारी संस्थानों में संवेदनशील डेटा की सुरक्षा को लेकर न तो पर्याप्त तकनीकी उपाय हैं और न ही प्रशिक्षित स्टाफ।

राजकोट का यह मामला केवल एक अस्पताल की गलती नहीं, बल्कि पूरे सिस्टम की असुरक्षा को उजागर करता है। यह चेतावनी है कि जब तक डिजिटल सुरक्षा को उतनी ही गंभीरता से नहीं लिया जाएगा, जितनी मानव सुरक्षा को दी जाती है, तब तक निजता की दीवारें बार-बार गिरती रहेंगी और निर्दोष नागरिकों की गरिमा पर इसी तरह हमला होता रहेगा।

पालनपुर-दीसा हाईवे पर भयावह सड़क हादसा: डिवाइडर से टकराई कार कई बार पलटी, सीसीटीवी में कैद हुआ पूरा दृश्य

पालनपुर। गुजरात के पालनपुर-दीसा हाईवे पर मंगलवार को एक दिल दहला देने वाला सड़क हादसा हुआ, जिसने राहगीरों को स्तब्ध कर दिया। तेज़ रफ़्तार में जा रही एक कार अचानक नियंत्रण खो बैठी और सड़क के बीच बने डिवाइडर से ज़ोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार डिवाइडर को पार करती हुई विपरीत दिशा में जा गिरी और कई बार पलटने के बाद रुक पाई। गनीमत यह रही कि कार में सवार दोनों लोग इस हादसे में बाल-बाल बच गए। यह पूरा हादसा हाईवे पर लगे एक सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया, जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। फुटेज में साफ़ देखा जा सकता है कि पालनपुर से दीसा की ओर जा रही कार अचानक तेज़ मोड़ पर संतुलन खो देती है। कुछ ही सेकंड में गाड़ी डिवाइडर से टकराती है, हवा में उछलती है और दूसरी तरफ जा गिरती है। सड़क पर मौजूद कुछ अन्य वाहन चालक इस नज़ारे को देखकर स्तब्ध रह गए। स्थानीय पुलिस और प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हादसे के बाद मौके पर आसपास के लोग तुरंत दौड़ पड़े और कार में फंसे यात्रियों को बाहर निकाला। रिपोर्ट्स के मुताबिक, चालक को हल्की चोटें आईं जबकि उसके साथ बैठा यात्री पूरी तरह

सुरक्षित रहा। प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि कार की रफ़्तार बहुत ज़्यादा थी, और अचानक सामने आए मोड़ को संभालने में चालक विफल रहा। डिवाइडर से टकराने के बाद गाड़ी की छत और दरवाजे बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। हादसे के बाद कुछ समय के लिए हाईवे पर ट्रैफिक भी बाधित हो गया था, जिसे पुलिस ने मौके पर पहुंचकर सामान्य कराया।

हादसे की जांच के लिए पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज जब्त कर लिया है और वाहन चालक से पूछताछ कर रही है। प्रारंभिक जांच में माना जा रहा है कि अत्यधिक रफ़्तार और ध्यान भटकने की वजह से वाहन नियंत्रण से बाहर हुआ।

गौरतलब है कि पालनपुर-दीसा हाईवे पर इस तरह के हादसे पहले भी हो चुके हैं। यह मार्ग अक्सर तेज़ गति से चलने वाले वाहनों के लिए ख़तरनाक साबित होता है, क्योंकि सड़क पर कई जगहों पर अचानक मोड़ और डिवाइडर के पास दृश्यता कम हो जाती है।

स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि इस मार्ग पर गति नियंत्रण के लिए स्पीड कैमरे और चेतावनी संकेत लगाए जाएं, ताकि भविष्य में ऐसे हादसों को रोका जा सके। सोशल मीडिया पर लोग यह भी कह रहे हैं कि “गति ही दुर्घटना का कारण बनती है” — यह वीडियो उसका जिंदा उदाहरण है। फिलहाल पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और हाईवे पर सुरक्षा बढ़ाने के निर्देश दिए गए हैं। यह घटना एक बार फिर इस बात की चेतावनी देती है कि तेज़ रफ़्तार कुछ ही सेकंड में जानलेवा साबित हो सकती है।

बाराबंकी में दर्दनाक सड़क हादसा — गंगा स्नान से लौटते वक्त ज्वैलर्स परिवार के आठ लोगों की मौत, पूरे शहर में शोक की लहर

बाराबंकी। उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले में सोमवार की देर रात एक ऐसा दिल दहला देने वाला सड़क हादसा हुआ, जिसने पूरे इलाके को शोक में डुबो दिया। गंगा स्नान से लौट रहे फतेहपुर के प्रसिद्ध ज्वैलर्स प्रदीप रस्तोगी और उनके परिवार के सभी आठ सदस्य सड़क दुर्घटना में मारे गए। हादसा देवा थाना क्षेत्र के कुतलूपुर गांव के पास हुआ, जब उनकी कार को सामने से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार पूरी तरह पिचक गई और उसमें सवार किसी को भी बचने का मौका नहीं मिला।

जानकारी के अनुसार, फतेहपुर के रहने वाले 55 वर्षीय प्रदीप रस्तोगी अपने परिवार और परिचितों के साथ बिठूर में गंगा स्नान के लिए गए थे। धार्मिक स्नान के बाद वे सभी सोमवार देर रात घर लौट रहे थे। जैसे ही उनकी कार बाराबंकी के कुतलूपुर गांव के पास पहुंची, सामने से आ रहे ट्रक ने उनकी गाड़ी को जबरदस्त टक्कर मारी। टक्कर की भयावहता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 14 फीट लंबी कार टकराकर महज 7 फीट की रह गई और मौके पर ही लोहे के मलबे में बदल गई।

दुर्घटना इतनी भयानक थी कि कार

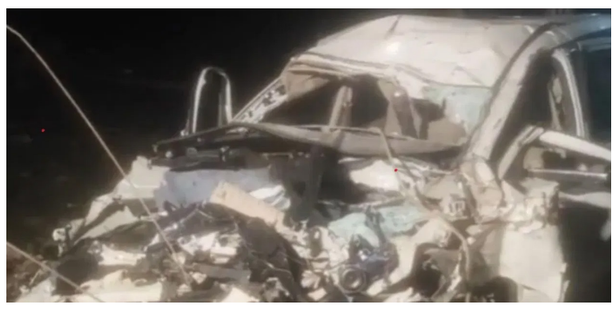

में बैठे छह लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, जबकि दो गंभीर रूप से घायल लोगों ने इलाज के दौरान लखनऊ ट्रॉमा सेंटर में दम तोड़ दिया। मृतकों में प्रदीप रस्तोगी (55), उनकी पत्नी माधुरी रस्तोगी (52), पुत्र नितिन रस्तोगी (35), चालक श्रीकांत (40), नैमिष (20) और बालाजी (55) शामिल हैं। जबकि इंद्र कुमार और विष्णु शुक्ला — जो प्रदीप रस्तोगी की ज्वैलरी दुकान पर काम करते थे — गंभीर रूप से घायल हुए थे, लेकिन बाद में उन्होंने भी अस्पताल में जीवन खो दिया।

घटना की खबर मिलते ही स्थानीय प्रशासन हरकत में आ गया। जिलाधिकारी शशांक त्रिपाठी, पुलिस अधीक्षक अर्पित विजयवर्गीय और अन्य वरिष्ठ अधिकारी तुरंत मौके पर पहुंचे और राहत-बचाव कार्य शुरू कराया। भारी संख्या में ग्रामीण भी घटनास्थल पर जमा हो गए। राहत दल ने गैस कटर की मदद से कार के मलबे को काटकर शवों को बाहर निकाला।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, प्रारंभिक जांच में यह स्पष्ट हुआ है कि हादसा तेज रफ्तार और ओवरटेकिंग के कारण हुआ। सीओ जगत राम कनौजिया ने बताया कि ट्रक चालक दुर्घटना के बाद फरार हो गया, जिसकी तलाश की जा रही है। वहीं सीएमओ डॉ. अवधेश कुमार यादव ने पुष्टि की कि सभी शवों का पोस्टमार्टम कराया जाएगा और मृतकों के परिजनों को हरसंभव आर्थिक और प्रशासनिक सहायता दी जाएगी। फतेहपुर और बाराबंकी दोनों जिलों में इस हादसे की खबर फैलते ही शोक की लहर दौड़ गई। प्रदीप रस्तोगी का परिवार स्थानीय स्तर पर बेहद सम्मानित माना जाता था। उनका ज्वैलरी व्यवसाय कई दशकों से संचालित था और क्षेत्र में उनका सामाजिक दायरा काफी बड़ा था। उनके परिचितों ने कहा कि यह परिवार धार्मिक प्रवृत्ति वाला था और प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर गंगा स्नान के लिए जाता था।

स्थानीय व्यापारियों ने मंगलवार को सभी बाजार बंद रखकर दिवंगत परिवार को श्रद्धांजलि दी। नगर के प्रमुख मंदिरों में शोक सभा आयोजित की गई और मृत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

इस दर्दनाक दुर्घटना ने एक बार फिर तेज रफ्तार और लापरवाही से ड्राइविंग के खतरों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि वे यात्रा के दौरान सतर्कता बरतें और विशेष रूप से रात्रिकालीन सफर में ट्रैफिक नियमों का पालन अवश्य करें। बाराबंकी की इस घटना ने पूरे उत्तर प्रदेश को झकझोर दिया है — एक ऐसा परिवार जो कुछ घंटे पहले गंगा के पवित्र जल में स्नान कर आस्था से लौट रहा था, अब पूरे शहर की आंखों में शोक बनकर बस गया है।

भिवंडी में कपड़ा व्यापारी से 11.88 लाख की ठगी, गुजरात की कंपनी के मालिक पर धोखाधड़ी का मामला दर्ज — पुलिस जांच में जुटी

ठाणे। महाराष्ट्र के ठाणे जिले के औद्योगिक शहर भिवंडी से एक गंभीर आर्थिक अपराध का मामला सामने आया है। यहां एक कपड़ा निर्माता व्यापारी से गुजरात की एक कंपनी के मालिक ने लगभग 11.88 लाख की ठगी कर ली। यह मामला न केवल स्थानीय व्यापारिक जगत में सनसनी का विषय बना है, बल्कि कपड़ा उद्योग में भुगतान सुरक्षा और व्यापारिक विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़े कर रहा है।

पुलिस के अनुसार, शिकायतकर्ता भिवंडी में ग्रे क्लॉथ (अप्रसंस्कृत कपड़ा) के निर्माण और आपूर्ति का काम करते हैं। उन्होंने अपनी शिकायत में बताया कि इस वर्ष 13 अप्रैल से 7 मई 2025 के बीच उन्होंने गुजरात स्थित एक कपड़ा कंपनी को लगभग 11,88,000 मूल्य का माल भेजा था। निर्धारित समय सीमा के भीतर माल की डिलीवरी पूरी कर दी गई थी, लेकिन भुगतान की तारीख आने के बाद भी कंपनी की ओर से राशि नहीं दी गई।

काफी समय तक भुगतान न मिलने पर व्यापारी ने बार-बार संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन आरोपी कंपनी मालिक ने टालमटोल करना शुरू कर दिया। अंततः जब व्यापारी ने दोबारा पैसा मांगने पर ज़ोर दिया, तो आरोपी

ने कथित रूप से धमकी दी कि अगर उसने भुगतान को लेकर ज़्यादा दबाव डाला तो गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। यह धमकी मिलने के बाद पीड़ित व्यापारी ने पुलिस से संपर्क किया और पूरे मामले की शिकायत दर्ज कराई।

भिवंडी तालुका पुलिस थाने के अधिकारियों ने बताया कि शिकायत दर्ज होने के बाद आरोपी के खिलाफ तुरंत एफआईआर दर्ज की गई है। मामला भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 318(4) (धोखाधड़ी) और धारा 351(2) (आपराधिक धमकी) के तहत दर्ज हुआ है। पुलिस ने बताया कि यह मामला न केवल आर्थिक अपराध के तहत आता है, बल्कि इसमें आपराधिक मंशा और धोखाधड़ी का स्पष्ट संकेत मिलता है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, जांच के दौरान अब तक यह पता चला है कि आरोपी ने जानबूझकर माल मंगवाया था और उसे बेचने के बाद भुगतान रोक दिया। पुलिस आरोपी के बैंक खातों, मोबाइल लोकेशन और व्यापारिक लेन-देन के रिकॉर्ड की जांच कर रही है ताकि जल्द ही उसे हिरासत में लिया जा सके।

स्थानीय व्यापारियों ने इस घटना पर नाराज़गी जताते हुए कहा कि हाल के वर्षों में कपड़ा उद्योग में इस तरह के धोखाधड़ी के मामले लगातार बढ़े हैं। छोटे और मध्यम वर्ग के निर्माता व्यापारियों के लिए यह एक बड़ी चिंता का विषय बन गया है, क्योंकि वे बड़ी कंपनियों के भरोसे अपना उत्पाद बेचते हैं, लेकिन भुगतान न मिलने पर उनका पूरा पूंजी चक्र ठप पड़ जाता है।

भिवंडी कपड़ा उद्योग लंबे समय से देश का एक प्रमुख उत्पादन केंद्र रहा है, जहां से रोज़ाना लाखों मीटर कपड़ा देशभर के राज्यों में भेजा जाता है। लेकिन हाल के वर्षों में वित्तीय अनुशासन की कमी और व्यापारिक भरोसे में गिरावट के चलते इस क्षेत्र के छोटे निर्माताओं को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

अधिकारियों ने कहा है कि पुलिस आरोपी की पहचान और लोकेशन का पता लगाने के लिए गुजरात पुलिस से भी संपर्क कर रही है। साथ ही, बैंकिंग रिकॉर्ड और ट्रांसपोर्ट इनवॉयस की जांच कर यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि माल की डिलीवरी वास्तव में हुई थी या नहीं।

यह घटना एक बार फिर यह साबित करती है कि व्यापार में भरोसा जितना ज़रूरी है, उतनी ही आवश्यक है वित्तीय पारदर्शिता और कानूनी सुरक्षा। भिवंडी के कपड़ा व्यापारियों ने प्रशासन से मांग की है कि ऐसे मामलों में कार्रवाई तेज़ की जाए ताकि उद्योग में काम कर रहे हज़ारों छोटे निर्माताओं का विश्वास बहाल हो सके।